रुनुक-झुनूक
(पवारी शब्दकोश)

वल्लभ डोंगरे

सतपुड़ा संस्कृति संस्थान की प्रस्तुति
एचआईजी–6, सुखसागर विला, फेज–1,
भेल, भोपाल–462021 (म.प्र.)
मोबा. 09425392656, फेक्स–0755–2552362
ई मेल–vallabhdongre6@gmail.com

सतपुड़ा संस्कृति संस्थान की प्रस्तुति

प्रकाशन वर्ष–2011
प्रकाशन सहयोग – ओझा पवार

पृष्ठ संख्या–200

मूल्य–100 रूपये

अनुक्रम

संक्षिप्त रूप –

अ - अरबी
अं - अंग्रेजी
फा - फारसी
तु - तुर्की
सं - संस्कृत
म - मराठी

बोली-भाषा

बोली–भाषा मनुष्य की संवेदना और उसके चैतन्य के बीच का सेतु है। भाषाई क्षमता और संस्कृति को समाज की शक्ति माना जाता है। विश्व के क्रियाकलापों को आत्मसात कर मनुष्य अपने चिंतन–मनन से उन्हें समाज के लिए प्रस्तुत करता है जो आगे चलकर संस्कृति का सृजन करते हैं। इस प्रकार संस्कृति लोगों के अर्जित आचार–विचारों की एक व्यवस्था है। इन्हीं आचार–विचारों को सुरक्षित रखने और प्रकट करने का काम बोली–भाषा करती है। चिंतन प्रक्रिया से प्रत्यक्ष संबंधित होने के कारण बोली–भाषा चिंतन के परिणामों और ज्ञानात्मक सक्रियता की उपलब्धियों को संकलित करती है और उन्हें शाब्दिक आधार प्रदान करती है,शब्दों को वाक्यों में पिरोती हैं और अभिव्यक्ति की गरिमा प्रदान करती है।

प्रत्येक जाति के संस्कार,उसकी आत्मा और उसके प्राण उसकी अपनी बोली–भाषा में बसते हैं। प्रत्येक संस्कृति का सारतत्व उसकी बोली–भाषा में अभिव्यक्त होता है। बोली–भाषा अतीत के लम्बे अंतराल के बाद विकसित होती है। बोली–भाषा का कार्य विचार विनिमय को संभव बनाना है। बोली–भाषा समाज के अस्तित्व के साथ अस्तित्व में आती है और उसके नष्ट होते ही नष्ट हो जाती है। यह समाज के निर्माण और विकास के साथ ही निर्मित और विकसित होती है। यह समाज से अलग नहीं होती। बोली–भाषा के माध्यम से ही समाज सृजनात्मक सक्रियता जारी रख पाता है। इसके बिना वह विघटित हो जाता है। अतः बोली–भाषा समाज के विकास और संघर्ष की वाहिका है।बोली भाषा से चलकर राष्ट्रभाषा तक की विकास यात्रा करती है जहॉ पहुॅचकर वह अपना उच्चतर स्वरूप अर्जित करती है। उन्नत भाषाओं का समृद्ध साहित्य राष्ट्र की बड़ी थाती है। बोली–भाषा का पहला काम व्यक्ति या व्यक्ति समूह के बीच सम्पर्क स्थापित करना है। बोलना ही किसी बोली–भाषा को संजीवनी शक्ति देता है।सुख–दुख,राग–द्वेष का प्रदर्शन और कालजयी साहित्य का सृजन अपनी बोली–भाषा में ही संभव है। रवीन्द्रनाथ टैगोर ने अंग्रेजी में खूब लिखा किन्तु गीताजंलि बांग्ला में लिखी तो उन्हें साहित्य का नोबल पुरस्कार प्राप्त हो गया। बोली–भाषा जातीय स्वाभिमान की उदवाहिका और जातीय प्रतीक की अस्मिता है।

वल्लभ डोंगरे

छपे शब्द : श्रम व साधना के प्रतीक

छपे शब्द की मृत्यु की घोषणा कर दी गई,पर शब्द ब्रह्म है।चाहे वह छपा हो या वाचिक,शब्द अमर है।भारत श्रुति और स्मृति का देश रहा है।यह शब्द के प्रति आदर का देश रहा है। लोक साहित्य श्रुति और स्मृति के बल पर युगों से जीवित है। वेद–पुराण,रामायण,भगवत गीता का घर–घर होना लिखित के प्रति आदर का परिचायक है। वृहस्पति ने लिखा है–षष्मासिक तु सम्प्राप्ते भ्रांतिः संजायते यतः। छात्राक्षराणि पत्रासढान्यतः पुरा। कहने का तात्पर्य यह है कि घटना के छः माह बीत जाने पर भ्रम उत्पन्न हो जाता है, इसीलिए ब्रह्मा ने अक्षरों को बनाकर पन्नों में निबद्ध किया। छपे हुए शब्द मन पर गहरी छाप छोड़ते हैं। पत्र पढ़कर जो आनंद मिलता है वह फोन पर बातें करने पर नहीं मिलता। छपे शब्द धरोहर होते हैं। उन्हें युगों तक रखा जा सकता है। वे एक से अधिक पाठक तक पहुॅच सकते हैं। फोन केवल एक सुनता है,जबकि पत्र का स्वाद घर के सारे सदस्य ले सकते हैं। और यह स्वाद न केवल एक बार अपितु बार–बार,महीनों,सालों बाद भी लिया जा सकता है।

छपे शब्द श्रम व साधना के प्रतीक हैं। उन्हें छापने के पूर्व किया गया आत्ममंथन, संशोधन, परिमार्जन सब गहरी आत्मीयता व प्रक्रिया का प्रतिफल होते हैं। इस प्रक्रिया में सृजनकर्ता के साथ–साथ उसके घर–परिवार के सदस्यों का श्रम व साधना भी समाहित होती है, जिसे प्रायः नजरअंदाज कर दिया जाता है। परिवार के सदस्यों के परस्पर समन्वय के बिना सृजन संभव नहीं है। सृजक भी उसी समाज का सदस्य होता है,उसके भी अपने दायित्व होते हैं और उन्हें भी उसे निभाना होता है,जिसे कई बार चाहकर भी सृजक जाने अनजाने पूरा कर पाने में सफल नहीं हो पाता है। इस तरह कहा जा सकता है कि किसी भी कृति के सृजन में सृजक के साथ–साथ उसके घर–परिवार के सदस्यों का श्रम व साधना भी समाहित होती है।

वल्लभ डोंगरे

बोल

बोल बोलते हैं,बतियाते हैं,अपनापन जताते हैं,स्नेहिल स्पर्श करते हैं,सुखवाड़ा पूछते हैं,अपनी छाती से लगाते हैं,पीठ थपथपाते हैं,गुदगुदी करते हैं,ऑखों में भरते हैं,अपने में समोते हैं।

बोल गाय के रंभाने जैसे हैं। कोयल के कुहकने जैसे हैं। मुर्गे की बांग जैसे हैं। चिड़ियों के चहकने जैसे हैं।चूड़ियों के खनकने जैसे हैं।पायल के छनकने जैसे हैं।महुए के टपकने जैसे हैं।

बोल पके काले रसीले जामुन की तरह हैं।मीठे ताजे आम की तरह हैं।अंगारों पर सींकी रोटी की तरह हैं।भभूर में भूने आलू, सेम, फली की तरह हैं।अनाज पीसती गा रही मॉ के कंठ की तरह हैं।बच्चों को सुलाने हेतु मॉ द्वारा गाई जाने वाली लोरी की तरह हैं।मॉ के हाथों बने स्वादिष्ट भोजन की तरह हैं।नई–नवेली दुल्हन द्वारा पकाए और परोसे गए भोजन की तरह हैं।कक्षा में प्रथम आने पर दादा द्वारा दी गई शाबासी की तरह हैं।

भक्ति में भाषा से ज्यादा बोली काम आती है। परमात्मा को आप न कहकर तुम (पूरण परमात्मा) से संबोधित किया जाता है।आप में वह अपनापन नहीं जो तुम में अभिव्यक्त होता है।भाषा के लिए एक मानसिक और वैचारिक स्तर अपेक्षित होता है,लेकिन बोली में इतना अनुशासन जरूरी नहीं होता।बड़ों की भाषा होती है,जबकि छोटों की बोली।बच्चे तुतलाते हैं तो तुतलाती बोली कहा जाता है न कि तुतलाती भाषा।बोली में अपनापन,आत्मीयता और गजब की मिठास होती है। एक लगाव–जुड़ाव होता है। सुदामा जब श्रीकृष्ण को पोटली के चावल देते हैं तो वे अपनी पत्नी सुशीला की बोली को ही अभिव्यक्त कर रहे होते हैं।सुशीला जो बोलना चाहती है वह चावल के दानों द्वारा अभिव्यक्त हो जाता है। पवार समाज में विवाह आदि मांगलिक अवसरों पर हल्दी से रंगे चावल के दानों को देहरी पर रखे जाने का रिवाज रहा है। वास्तव में,चावल के माध्यम से व्यक्ति अपनी भावना ही अभिव्यक्त करता है।

शबरी कुछ नहीं कहती है। वह केवल राम को बेर खिलाती

है।खुशी के मारे उसका गला रूंध जाता है। उसके बेर ही उसके बोल बन जाते हैं।राम समझ जाते है और बिना बोले सुने ही दोनों के बीच वार्तालाप हो जाता है। संकटग्रस्त बेटे के मुँह से निकले संबोधन माँ शब्द से ही माँ को अपने बेटे के संकटग्रस्त होने का आभास हो जाता है। दुख के अवसर पर मौन भी मुखर हो जाता है।ऐसे अवसरों पर सब कुछ बोलकर भी कुछ नहीं बोला जाता और कुछ नहीं बोलकर भी सब कुछ बोल दिया जाता है।

मॉं जब बच्चे को बोलना सिखाती है तो वह अपनी बोली में ही सिखाती है। वह बोली ही परिवार को बाँधे रखती है।बोली के माध्यम से ही बच्चा इस दुनिया को समझने की ओर अग्रसर होता है। बोली को छोड़ना,भूला– बिसरा देना माँ को छोड़ने,भूला–बिसरा देने जैसा है। बोली अपनी संस्कृति को संवारने–संजोने वाली संजीवनी है। जब तक बोली जीवित है,तब तक संस्कृति जीवित है,व्यक्ति की पहचान जीवित है।बोली का मरना व्यक्ति का मरना है,उसकी पहचान का खोना है। व्यक्ति अपनी बोली बोलकर अपने को,अपने समाज को,अपनी संस्कृति को बचाने में अहम् भूमिका निभा सकता है, संस्कृति रूपी इस धरोहर को भावी पीढ़ी को सौंपने में मदद कर सकता है और अपनी बोली,अपनी संस्कृति की परम्परा को आगे बढ़ाने में सहयोगी साबित हो सकता है।
वल्लभ डोंगरे

पवारी बोली का अस्तित्व

पवारी बोली में तुर्की,अरबी,फारसी,अंग्रेजी,संस्कृत आदि भाषाओं के शब्दों की प्रचुरता हैं। रानी कैकयी कैकय राज्य तुर्की की थीं। राजा दशरथ के साथ विवाह होने पर तुर्क भाषा व संस्कृति का भारत आना लाजिमी था। चूँकि पवार क्षत्रिय वंश से सरोकार रखते हैं, अतः पवारी पर तुर्की का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है। रघुकुल राजाओं के साथ–साथ राजा भोज का राज्य अरब व फारस तक होने के प्रमाण उपलब्ध हैं।चूँकि पवार राजकुल से संबंध रखते है,अतः पवारी बोली पर अरबी व फारसी का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है। भारतीय भाषाओं जैसे– संस्कृत, कश्मीरी,पहाड़ी,गुजराती,मारवाड़ी,मराठी,गोंडी,पंजाबी,हरियाणवी, बघेली, बुंदेली, छत्तीसगढ़ी, मालवी, निमाड़ी, बिहारी आदि बोली–भाषा के शब्द भी इसमें प्रचुरता से पाए जाते हैं। कहा जाता है बोली–भाषा समय के साथ–साथ अपने को समृद्ध करती चलती हैं। पवारी बोली ने भी समय के साथ–साथ अपने को समृद्ध करने में कोई कोर–कसर बाकी नहीं रखी है।समय, काल, परिस्थिति के अनुरूप समाज में प्रचलन में आने वाले हर शब्दों को इस बोली ने पूरी शिद्दत एवं सहजता से स्वीकारा है। यह अन्य बोली–भाषा के शब्दों को अंगीकार कर समृद्ध तो हो ही रही है पर अपने ही घर एवं जमीन से जुड़े शब्दों से धीरे–धीरे कटती भी जा रही है। सिंचाई के साधन व संसाधन बदलते ही परम्परागत साधन–संसाधन, तौर–तरीके पीछे छूटते जा रहे हैं। कुए से जुड़े शब्द जैसे– धाव, ससनी, खूँट, परोता, मोट, एट, समदूर, डोहन, डांड आदि दिन प्रतिदिन व्यवहार में न आने के कारण लोगों के दिल और दिमाग से उतरने लगे हैं। यह किसी भी बोली–भाषा के अस्तित्व के लिए शुभ संकेत नहीं है।परन्तु खुशी की बात यह है कि पवारी बोली ने सम्पर्क में आए बोली भाषा के लोगों से अपने को समृद्ध करने में कोई कोर कसर बाकी नहीं रखी है। टाली,डोकरा–डोकरी,खुखड़ा–खुखड़ी आदि गोंडी से,पानी पाउस,वारा,सकार आदि मराठीसे, स्टेशन, पोस्टआफिस, बस, टीवी, रेडियो, फिल्म, सिनेमा, सायकल, मोटर सायकल, बल्ब, लाइट,

कम्प्यूटर, रेल, ग्लास आदि अंग्रेजी से, लात, जूता आदि हरियाणवी से, धोती, यज्ञ, खीसा आदि संस्कृत से गृहण किए हैं। यह प्रवृत्ति जहॉ दूसरी बोली भाषा के प्रति सम्मान और सहिष्णुता का प्रतीक है वहीं यह अपनी उदारता व सहृदयता का प्रतीक भी है।

वल्लभ डोंगरे

- समाज को विधाता की ओर से जो सबसे बड़ा वरदान मिला है वह बोली/भाषा है।
- बोली में समाज की आत्मा बसती है।
- शब्द रूपी ज्योति संसार में प्रकाशित नहीं हुई होती तो तीनों लोक अज्ञानरूपी अंधेरे में डूबे रहते।

–आचार्य दण्डी

बोली/भाषा की प्रकृति

1. बोली/भाषा एक अर्जित सम्पति है।
2. यह सभ्यता की चितेरी है।
3. यह समाज का साधन है।
4. यह व्यावहारिक कुशलता है।
5. यह वाचिक प्रतीकों की व्यवस्था है।
6. यह लिपि संकेतों द्वारा लिखित रूप धारण करती है।
7. यह परिवर्तनशील है।
8. इसका मूल रूप सदैव सुरक्षित रहता है।

बोली/भाषा का महत्व

1. बोली/भाषा भावाभिव्यक्ति एवं विचार विनिमय का साधन है।
2. यह सामाजिक व्यवहार और अंतःक्रिया का आधार है।
3. यह मानव विकास का मूल आधार है।
4. यह मानव सभ्यता और संस्कृति की मूल पहचान है।
5. यह भाव,विचार,अनुभव व आकांक्षाओं को सुरक्षित रखने का आधार है।

बोली/भाषा की विशेषताएं

1. बोली/भाषा का प्रयोग एक कौशल है।
2. यह ज्ञानगम्य नहीं,अभ्यासगम्य है।
3. यह सामाजिक व्यवहार है।
4. यह सतत अभ्यास द्वारा सीखी जाती है।
5. सीखने के प्रति अभिरूचि जरूरी है।
6. यह सतत अभ्यास सही बोली/भाषा और आदत का ही परिणाम है।

बोली/भाषा में शब्दों का उदभव

1. तत्सम शब्द (उनके समान)–संस्कृत शब्दों के समान शब्द जो ज्यों के त्यों बोले जाते हैं, जैसे– कृष्ण, स्वजन, राजा, लता, पुत्र, अग्नि आदि।
2. तद्भव शब्द (उससे उत्पन्न)–संस्कृत शब्दों से उत्पन्न शब्द, जैसे– काला, हाथ, काम, रात, घोड़ा, लोहा, कबूतर, कुम्हार, दूध, जीभ, मॉ, बरस, दही, तुम आदि।
3. देशज शब्द–देश में उत्पन्न शब्द जैसे–गॉव में मोटरसाइकिल के लिए फटफटी, हार्न के लिए भोपू, चिक्कलस के लिए झकझक, मोटी धार के लिए भदभदा, बड़े छेद के लिए भोकटा आदि।
4. संकर/मिश्रित शब्द–दो बोली/भाषा से बने शब्द,जैसे–
   टिकिटघर –अंग्रेजी + हिन्दी
   रेलगाड़ी – अंग्रेजी + हिन्दी
   बमवर्षा – अंग्रेजी + हिन्दी
   लाठीचार्ज – हिन्दी + अंग्रेजी
   जॉचकर्ता – हिन्दी + संस्कृत
5. **विदेशी शब्द**– बोली/भाषा अपना विकास करते रहती है और उसमें विदेशी बोली/भाषा के शब्द भी जज्ब होते रहते है।
   अंग्रेजी– रेडियो, टीवी, स्कूल, सिनेमा, जेल, गिलास, गैस, कोट,

पेंट, टेलीफोन, नर्स, डॉक्टर, कप, फीस, प्रेस, टाई, टिकिट आदि।
अरबी– असर, अजीब, आदत, इलाज, उम्र, अखबार, दिमाग, तबादला, नशा, दावत, कसूर, इशारा, कसर, किताब, जनाब, तकदीर, तमाशा, तरफ, तरक्की, हिसाब, हमला, शराब आदि।
तुर्की– कालीन, कैंची, चेचक, तलाश, बहादुर, लफंगा, काबू, कुर्ता, गनीमत, चाकू, तोप, दरोगा, बारूद, लाश, सुराग, अरमान, कुली आदि।
पुर्तगाली–अचार, बमीज, पादरी, पिस्तौल, कमरा, कप्तान, अलमारी, तौलिया, बोदाम, चाबी, तम्बाकू, गमला आदि।
फांसीसी– कारतूस, कूपन, कर्फ्यू, कार्टून, टेनिस, आलपीन, सूप, पिकनिक आदि।
चीनी– चाय, लीची, तूफान आदि।
जापानी – रिक्शा आदि।
यूनानी – अकादमी, एटम, एटलस, टेलीग्राम आदि।
लैटिन – इंच, एजेण्डा, पेंशन, बोनस, मशीन, मिल आदि।

बोली का व्यक्तित्व पर प्रभाव

महाभारत युद्ध के लिए उपयुक्त स्थान की खोज की जा रहा थी,जहॉ के लोग संवेदनशील न हो,युद्ध में बड़ी संख्या में लोगों के मारे जाने पर दुखी न हो। भगवान कृष्ण खोजते–खोजते हरियाणा पहुॅचे। उन्होंने देखा एक किसान अपने बेटे के साथ खेत जोत रहा था। तभी अचानक सांप ने बेटे को डस लिया और बेटा वहीं तड़फ–तड़फ कर मर गया। बाप ने बेटे के शव को खींचकर खेत के बाहर कर दिया और अपने काम में लग गया। उसी समय बहू अपने ससुर और पति की रोटी लेकर आ रही थी। भगवान कृष्ण ने उसे रोककर कहा–तुम जिस पति के लिए रोटी लेकर जा रही हो वह तो खेत में मरा पड़ा है। भगवान कृष्ण की बात सुनकर वह वहीं बैठ गई और रोटी खोलकर खाने लगी।

भगवान कृष्ण ने सोचा–यहॉ तो लोगों में रत्ती भर भी संवेदनशीलता नहीं है,अतः महाभारत युद्ध के लिए इससे अधिक उपयुक्त स्थान और कोई नहीं हो सकता। और अंततः हरियाणा के कुरूक्षेत्र में ही महाभारत युद्ध लड़ा गया। कहने का तात्पर्य यह है कि वहॉ की बोली में वह मधुरता,वह अपनापन नहीं था जिसके कारण लोगों में पर्याप्त संवेदनशीलता का विकास नहीं हो पाया था। बोली का व्यक्तित्व पर गहरा प्रभाव पड़ता है,यह दृष्टांत इस बात का प्रमाण है।

वल्लभ डोंगरे

बोल का मोल

दो बच्चे पेड़ पर चढ़े थे। अचानक ऑधी आ गई। दोनों बच्चे की मॉएं दौड़ती हुई पेड़ के समीप पहुॅची। पहली मॉ अपने बेटे से बोली–बेटे, अपने दोनों हाथों से डाल को मजबूती से पकड़ लो। दूसरी मॉ अपने बेटे से बोली–देखना बेटे,कहीं गिर मत जाना। दूसरी मॉ का बेटा कुछ समय बाद डर के मारे घबराकर पेड़ से गिर पड़ा जबकि पहली मॉ का बेटा हिम्मत से डाल को मजबूती से पकड़ा रहा और ऑधी रूकते ही पेड़ से सुरक्षित उतरने में सफल रहा। पहली मॉ के बोल सकारात्मक थे जबकि दूसरी मॉ के बोल नकारात्मक। यही कारण है कि सकारात्मक विचार वाली मॉ अपने बेटे को पेड़ से सुरक्षित उतारने में सफल रहीं जबकि नकारात्मक विचार वाली मॉ अपने बेटे को पेड़ से सुरक्षित उतारने में सफल न हो सकी।

कहते हैं, मंत्र सकारात्मक बोल के पुंज होते हैं।उनसे सकारात्मक ऊर्जा निकलते रहती है जो व्यक्ति को सकारात्मक विचार से भरती रहती है। उपर्युक्त दृष्टांत ही इस बात का पर्याप्त प्रमाण है।

वल्लभ डोंगरे

शब्दों का सफर

लुह्यड़ी–

पंजाबी शब्द लोहड़ी इसी से बना है। परची या सिलगी लकड़ी को लुह्यड़ी कहा जाता है। लोहड़ी पर्व पर पंजाब में जलती लकड़ियों के आसपास इकट्ठे लोग नए अन्न का नैवेद्य अग्नि देवता को अर्पित कर उसके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं। पंजाब में यह पर्व वर्ष में एक बार मनाया जाता है। पवारों के घरों में रोज लुह्यड़ी परचती है,सिलगती है और नैवेद्य चढ़ाया जाता है। इस दृष्टि से हमारे घरों में रोज लोहड़ी (लुह्यड़ी) मनाई जाती है।

करदोड़ा–

कर याने कमर। कमर के आसपास बॉधा जाने वाला धागा करदोड़ा कहलाता है। हमारे पूर्वज राजा और रणबॉकुरे होने के कारण युद्ध में जाया करते थे। युद्ध भूमि में मारे जाने पर शवों की पहचान में सुविधा हो तथा तदनुरूप अंतिम संस्कार हो,इसे ध्यान में रखते हुए कमर में धागा बॉधा जाने लगा। आगे चलकर यह एक रस्म में परिवर्तित हो गया और हर पुरूष वर्ग इसे कमर में बॉधने लगा,जो आज पर्यन्त जारी है।

लोग लोगनी–

स्व से निकलकर हम हो जाए या मैं से निकलकर लोग हो जाए या लोगनी हो जाए,यह अपने आप में बड़ी ही महत्वपूर्ण बात है। विवाह के बाद वर लोग हो जाए और वधु लोगनी तो फिर जीवन में झंझट ही न रहे। विवाह के बाद एक न रहकर सब हो जाने का ही परिचायक है–लोग और लोगनी होना।किसी भी भाषा में इतने सटीक शब्द नहीं है जो विवाहोपरांत वर वधु को इतनी बखूबी से व्याख्यीत करें।

सुखवाड़ा–

सुख,समृद्धि व अच्छे स्वास्थ्य की खुशखबरी तथा सामने वाले के लिए भी समान मंगलकामनाएं। बेटी जब मायके से ससुराल जाती तो मॉ बेटी के हाथों समधन के लिए सुखवाड़ा भेजती और बहु जब ससुराल

से मायके जाती तो सास अपनी समधन के लिए सुखवाड़ा भेजती है। सुखवाड़ा जैसा शब्द अन्य बोली–भाषा में दुर्लभ है।

भीर–

जहॉ पानी भरने वालों की भीड़ लगे वह भीर।भीड़ ही भीर हो गया,पानी भरने का स्थान हो गया। कुंआ सामान्य है पर भीर असामान्य है।

थप्पी–

अनाज का ढेर थप्पी कहलाता है। अनाज को एक जगह जमा करने पर जो ढेर बनता है वही थप्पी कहलाता है।

गोधूलि वेला–

गोधूलि वेला विवाह अवसरों के लिए शुभ मानी जाती है। सूर्यास्त के समय जब गाएं अपने अपने घरों को लौटती हैं तब गायों के खूरों से वातावरण में उठी धूल को गोधूलि कहा जाता है और उस अवसर विशेष को गोधूलि वेला।

लटपट होना–

बेसुध,बेजान,निढाल होकर गिर पड़ना जैसे कि जान ही न हो।

दापका–

मिट्टी की बनी एक तरह की चक्की जिसे हाथ से खींचा जाता है। धान,कोदो,कुटकी आदि के छिलके उतारने के लिए इन्हें इसमें दरा जाता है।

पनोची–

पानी से भरे गुंड,डेग,मटके आदि रखने के लिए कमर की ऊंचाई बराबर बना लकड़ी का स्टेण्ड। पहले गॉवों में महिलाएं सिर पर दो–दो गुंड रखकर दूर कुएं से पानी लाती थीं, जिन्हें किसी की सहायता के बिना सिर से उतारकर जमीन पर रखने में बड़ी कठिनाई होती थी। फिर हर बार कोई सदस्य घर में उपस्थित ही हो यह जरूरी नहीं था। उपस्थित रहने पर भी बहुएं ससुर का सम्मान करने के कारण उनसे सहायता लेने में सकुचाती थीं। नीचे पानी रखने से बच्चे भी अक्सर पानी

बर्बाद कर दिया करते थे। पानी ऊपर रखने से सुरक्षित और ठंडा भी बना रहता था। इन्हीं सब आवश्यकताओं की पूर्ति करने में खरी उतरने के कारण पनोची अस्तित्व में आई।

रूनुक–झुनूक–

बैलों के पैरों में बंधी पैंजन की मधुर एवं लयबद्ध आवाज।

सिवाना बॉधना–

गॉव की सीमा रेखा को सिवाना कहा जाता है।गॉव की सीमा से लगे दूसरे गॉवों से महामारी,रोग आदि अपने गॉव में आने से रोकने के लिए गॉव का भूमका सीमा रेखा पर टोटका कर देता है।एक तरह से यह लक्ष्मण रेखा होती है जिसे पार कर पाना रोग व बीमारी आदि के लिए संभव नहीं होता।

सेंदूर चढ़ाना–

हनुमान की प्रतिमा पर तेल व सिंदूर मिलाकर लगाने की रस्म। यह रस्म उत्सव पूर्ण तरीके से पूर्ण की जाती है। गॉव के सभी लोग इस अवसर पर उपस्थित रहते हैं।सामान्यतः मनौती पूरी होने पर इस तरह के उत्सव आयोजित करने की परम्परा है।

लंगोट चढ़ाना–

हनुमान की प्रतिमा पर लंगोट चढ़ाने की रस्म। यह रस्म उत्सव पूर्ण तरीके से पूर्ण की जाती है। गॉव के सभी लोग इस अवसर पर उपस्थित रहते हैं।सामान्यतः मनौती पूरी होने पर इस तरह के उत्सव आयोजित करने की परम्परा है।

निशान चढ़ाना–

मंदिर आदि पर निशान या झंडी चढ़ाने की रस्म। यह रस्म उत्सव पूर्ण तरीके से पूर्ण की जाती है। गॉव के सभी लोग इस अवसर पर उपस्थित रहते हैं।सामान्यतः मनौती पूरी होने पर इस तरह के उत्सव आयोजित करने की परम्परा है।

नद्दी कोदी जानूं–

घर में शौचालय नहीं होने पर शौच के लिए बाहर जाने हेतु

प्रचलित शब्द।इस तरह के और भी शब्द प्रचलित है,जैसे–झाड़ा फिरन जानूं,लोटा ले ख् जानूं।

मुंढा फाड़य–

मॉ को देखकर बच्चों द्वारा खाने को मॉगना। अवलोकन के आधार पर प्रचलन में आया मुहावरा। चिड़िया द्वारा चुग्गा लाने पर घोंसले में रह रहे चिड़िया के बच्चों द्वारा चोंच खोलकर चीं–चीं की आवाज करके खिलाने की मॉग करना,या मालिक के आने पर चारा आदि डालने के लिए गाय आदि का रंभाकर ध्यान खींचना। मॉग करने पर प्रायः मुंढा काहे फाड़य का प्रयोग किया जाता है।

झंकारना– किसी बेजान वस्तु आदि का हवा में उछालकर फेंकना। इससे एक विशेष तरह की ध्वनि निकलने से झंकारना शब्द प्रचलन में आया। यह क्रिया किसी वाद्य यंत्र के तार आदि छूने पर निकलने वाली ध्वनि एवं अर्थ से भिन्न है।

फड़फड़ाय–

पक्षियों का पंख फड़फड़ाकर उड़ने को तैयार होने की क्रिया के अवलोकन पर प्रचलन में आया शब्द। किसी व्यक्ति आदि का सामान्य की अपेक्षा त्रीवतर व्यवहार करने पर काहे फड़फड़ाय कहा जाता है।

कणिक–

पिसा हुआ अनाज कण से भी महीन होने के कारण कणिक कहलाता है। कणिक संस्कृत के कण शब्द से बना है। हिन्दी भाषा में आटा शब्द ही प्रचलन में है। कणिक आटा शब्द से ज्यादा सटीक व सही है।

खुड़ना–

भाजी के पत्तों के साथ नरम डंठल को चुनना खुड़ना कहलाता है। चने,मेथी,सरसों,पालक अम्बाड़ी आदि के पत्तों को भाजी बनाने के उद्देश्य से खुड़ा जाता है। भाजी तोड़ने में तोड़फोड़ का भाव है जबकि खुड़ने में पौधों को संवारने व उसके विकास का भाव छिपा है।

हिरोती–

हिन्दी में पिसी मिर्च के मसाले को मिर्च मसाला कहा जाता है। मिर्च मसाले के लिए पृथक से कोई शब्द प्रचलित नहीं है। पवारी में पिसी मिर्च को हिरोती कहा जाता है।पवारी बोली का हिरोती शब्द अपनाकर हिन्दी भाषा समृद्ध ही होगी।

लवट्या टूटना–

सूरज का धूप के गोले के रूप में अंगार बरसाना। गर्मी में तेज धूप में आग के गोले बरसने का आभास होने पर लवट्या टूटना शब्द का प्रयोग किया जाता है।

भभूर–

राख और अंगार के बीच की स्थिति। न पूरी राख न पूरी आग। आलू, भटे, फली, भिलवे आदि भूनने के लिए आदर्श स्थिति।

कुरोड़ी–

गेहूॅ के आटे में खमीर उठने तथा खट्टा होने पर उसे चुड़ाकर बने पापड़।

लेपट्या–

चने के आटे का आलन लगा चावल का व्यंजन।

लेप्सी–

चावल व मही से बनी पतली खट्टी पेज।

लाटा–

भूनी तिल,मूंगफली के भूने दाने,भूने महुए आदि को ओखली में कुटकर बनाया सूखा व्यंजन जिसे पीठी की तरह खाया जाता है।

कर–

बैलों का त्योहार पोला कहलाता है जिसके दूसरे दिन पूरे गॉव के लोग जुआ खेलते हैं जिसे कर कहा जाता है। इस खेल में मिली हार–जीत से व्यक्ति अपनी जिंदगी में मिली हार–जीत को सहजता से लेना सीखता है तथा इसे जिंदगी का जरूरी हिस्सा समझता है।

सेहरा– छिंद/खजूर की पत्ती से बना वर–वधु का विशेष पहनावा जिसे विवाह अवसर पर पहना जाता है।

सत्तू–

भूने चने,भूने गेहूँ व भूने जौ को पिसकर बनाया आटा जिसे पानी में घोलकर आवश्यकतानुसार गुड़ या शक्कर मिलाकर विशेषकर गर्मी में खाया जाता है।

पचपावली–

महाशिवरात्रि का पर्व जिसपर गॉव के लोग भगवान शिव के दर्शनार्थ व उनका आशीर्वाद प्राप्त करने शिवरात्रि मेले में जाते हैं।

लम्हेटा–

पूर्व पति की संतान को दूसरे पति के घर लाने पर उक्त संतान लम्हेटा कहलाती है।

पाट–

विवाहित नर–नारी का दूसरा विवाह पाट कहलाता है जिसमें विवाह जैसी रस्में न होकर वर–वधु की पीठ आपस में लगाई जाती है।

पीट–

मही व मक्के के आटे का बना नमकीन व खट्टा व्यंजन।

देव को मारा–

एक प्रकार की अछूत बीमारी जिसमें सुरक्षा की दृष्टि से रोगी को गॉव के बाहर रखकर उसका इलाज किया जाता है।

हनुमान पर पानी चढ़ाना–

एक प्रकार का मुहावरा। जो कम पानी में नहा ले या मात्र लोटा दो लोटा पानी शरीर पर डाल ले जैसे हनुमानजी की प्रतिमा पर डाला जाता है तब ऐसे व्यक्ति के लिए इसका प्रयोग किया जाता है।

इसका दूसरा अर्थ है–पूजा स्वरूप हनुमानजी को जल अर्पित करना।

आठ हाथ काकड़ी नौ हाथ बीजा–

अतिशयोक्तिपूर्ण।

नीम पहनना–

चेचक आदि महामारी से रक्षा करने वाली देवी को मरी माय कहा जाता है। हर गॉव में मरी माय का मंदिर होता है।चेचक आदि महामारी

होने पर मरी माय से रक्षार्थ गुहार लगाई जाती है और मनौती मानी जाती है कि वह स्वस्थ होने पर नीम पहनेगा। नीम को स्वस्थता का प्रतीक माना जाता है व इसी में देवी मॉ का वास माना जाता है।देवी मॉ को प्रसन्न करने के उद्देश्य से मनौती मानने वाला व्यक्ति नीम की टहनियां शरीर से बॉधकर पूजा सम्पन्न करता है। इस रस्म को नीम पहनना कहते है।

टापरी–

फसल को खलिहान में लाने के पूर्व खलिहान की जगह को पानी से सींचकर बीचोंबीच लकड़ी का एक खूँट(खम्बा) गाड़ा जाता है जिससे रस्सी को इस तरह बॉधा जाता है कि वह खम्बे के चारों ओर आसानी से घूम सके।इसी रस्सी से बैलों को एक सीध में जोता जाता है और उन्हें गोल–गोल हॉका जाता है जिससे खलिहान की मिट्टी टीपते जाती है। बैलों को तब तक गोल गोल हॉका जाता है जब तक खलिहान की जमीन बैलों के खुरों से टीपकर फर्श की भांति कठोर न हो जाए और वह दावन के लिए आदर्श स्थिति में न आ जाए।

दावन–

खलिहान में रखी डंठल भरी फसल से एक एक दाना अलग करने के उद्देश्य से बैलों को दावन में जोता जाता है। खलिहान के बीचोंबीच गड़े खम्बे से इस तरह रस्सी बॉधी जाती है कि वह आसानी से चारों ओर घूम सके।इस रस्सी से बैलों को एक सीध में जोता जाता है। फसल पर बैलों के बार–बार चलने से अनाज व डंठल अलग अलग हो जाते हैं।डंठल को बीच–बीच में अलग भी किया जाता है। इस तरह निकले अनाज को बाद में सूपा लगाकर या हवा में उड़ाकर साफ सुथरा किया जाता है।

रास–

दावन के बाद हवा में उड़ाकर व सूपा लगाकर साफ की गई खलिहान में जमा अनाज की रासि(ढेर) को रास कहा जाता है। पूजा के बाद इसे नापकर बोरों में भरकर घर लाया जाता है।

अगवानी–

गॉव से निर्धारित दूरी पर स्थित ऐसा स्थान जहॉ पहुॅचकर आगन्तुकों को सम्मानपूर्वक घर लाया जाता है और आगन्तुकों के लौटने पर उस निर्धारित स्थान तक उन्हें ससम्मान पहुॅचाया जाता है। वहॉ से आगन्तुक अपने गंतव्य को रवाना हो जाता है।

जनवासा–

बारातियों के लिए निर्धारित अस्थायी आराम गृह। बारात के आगमन पर बारात झेलकर बारातियों को जनवासा में पहुॅचाया जाता है ताकि वे थोड़ा आराम कर सकें व विवाह संस्कार संपादित करने के लिए तैयार हो सकें।गॉव में समाज के किसी व्यक्ति के घर को जिसमें र्प्याप्त स्थान व व्यवस्था हो , जनवासा बना दिया जाता है।

बारात झेलना–

बारात के आगमन पर बारातियों की अगवानी करने की रस्म। अगवानी करते समय बारातियों को उनकी प्रतिष्ठा के अनुरूप मान–सम्मान दिया जाता है।फिर भी बाराती व्यवस्थाओं को लेकर संतुष्ट नहीं हो पाते और विवाह के पूर्व उनके नाज–नखरे उठाने पड़ते हैं। एक तरह से उन्हें झेलना पड़ता है ताकि विवाह की रस्में निर्विघ्न सम्पन्न हो सकें। बारात गॉव के बाहर अगवानी पर ही इसीलिए झेली जाती है ताकि उनके गिले शिकवे गॉव के बाहर ही हल किए जा सकें और उन्हें गॉव में न लाकर या सार्वजनिक न करके वधू पक्ष के सम्मान की रक्षा की जा सके।

मंढा उजाना–

विवाह अवसर पर मंडप छाने की प्रथा है जिसमें जामुन या गुलर की टहनियां मंडप की छत पर छाना(डालना)शुभ माना जाता हैं। विवाह के बाद पहली बारिश की बूॅदें पड़ने पर पूरे विधि–विधान के साथ इसे उजाने (उखाड़ने) का रिवाज है,जिसे मंढा उजाना कहते है। मंढा सुख समृद्धि के प्रतीक स्वरूप डाला जाता है। मंढा डालने पर आंगन में छाया हो जाती है, जिससे गर्मी से राहत मिलती है और मेहमानों के भोजन तथा विश्राम के लिए काम में आता है।अब चूॅकि घर में बहू के रूप में

चॉद का टुकड़ा आ जाता है तो वह घर तथा बाहर दोनों जगह अपने संस्कारों का उजाला फैलाए इसीलिए मंढा उजाया जाता है ताकि घर–ऑगन पुनः उजाले से भर जाए।

तोरण मारना–

विवाह मंडप में गॉव के कोटवार द्वारा तोरण बॉधे जाने का रिवाज है। विवाह के पूर्व दुल्हे को तोरण पार कर मंडप में प्रवेश करना होता है। इस प्रथा को ही तोरण मारना कहते है। पवारों का क्षत्रिय व राजकुल से संबंध होने के कारण दूल्हे को राजा की तरह सम्मान दिया जाता है और जीवन को युद्धभूमि की तरह लिया जाता है। इसी कारण तोरण मारने या तोरण जीतने जैसा भाव यहॉ भी रहता है।जिस तरह युद्ध जीतकर ही राज्य जीता जा सकता है,उसी तरह दिल जीतकर ही दुल्हन को अपना बनाया जा सकता है।

बाहुड़ल्या उजाना–

घर की बेटी के भावी जीवन की सुख समृद्धि के लिए सावन मास में भुजलिए(जवारे)बोए जाने का रिवाज है। बेटी के विवाह होने पर मॉ के घर बोए जाने वाले इन भुजलियों को ससम्मान विदाई दी जाती है।राखी के दूसरे दिन इन्हें समारोहपूर्वक नदी पर ले जाकर इनकी मिट्टी साफ की जाती है तथा इन्हें एक दूसरे को सौंप कर एक दूसरे के जीवन के लिए शुभकामनाओं का आदान प्रदान किया जाता है। एक तरह से यह बेटी को सीख भी है कि जैसे भुजलिए को अपनी जमीन,अपनी मिट्टी से अलग होना पड़ता है, उसी तरह बेटी को भी विवाह होने पर अपनी जमीन,अपनी मिट्टी से अलग होना पड़ता है।

संस्कृति–

मनुष्यों के मन में सदियों–सदियों साथ रहने और एक दूसरे का सुख–दुख बॉटने के कारण कुछ संस्कार पड़ते हैं।कछ स्मृतियॉ तह की तह बैठती जाती है,कुछ अभिप्रेरक मूल्य घर करते जाते हैं। संस्कृति इन सबका निथरा हुआ प्रवाहशील रस है।भारतीय संस्कृति जिन मूल्यों से परिचालित होती रही है उनमें समस्त प्राणियों का कल्याण,सत्य की

खोज,सबकी मुक्ति की चाह प्रमुख है।

विवाह–

विवाह को बिहा कहा जाता है।संभवतः ब्याह का ही यह भ्रंश है। विवाह पाने के लिए नहीं होने के लिए है।लता लता न रहकर पेड़ बन जाए,व्यक्ति व्यक्ति न रहकर किसी का प्रिय हो जाए, विवाह इसलिए है।विवाह जोड़ता है अपने को तोड़ने की कीमत पर।विवाह सबको अपने में और सबमें अपने को समोने की कला है।प्रायः देखने में भी यही आता है जो सबमें समाने और अपने में सबको समोने के लिए तैयार रहते हैं उन्हीं का वैवाहिक जीवन सुखद और सफल होता है।

भगवान राम ने विवाह के पूर्व अंहकार का धनुष तोड़ा था।यह इस बात का प्रतीक है कि अंहकार को तोड़कर ही सुखी वैवाहिक जीवन मे प्रवेश किया जा सकता है।

तर्पण–

अंजुरी भर जल पितरों के प्रति श्रद्धाभाव रखते हुए जलस्रोतों में प्रवाहित कर देना तर्पण है।

श्राद्ध– पितरों के प्रति श्रद्धा से आभार प्रदर्शन श्राद्ध कहलाता है।पितर देव तुल्य होते हैं तथा वे खुद पधारते हैं। उनका उत्सव देवताओं के उत्सव जैसा गरिमामय और वैभवपूर्ण रखा जाता है ताकि वे खुश होकर आशीर्वाद देकर जाएं।

कोजागिरी–

शरद पूर्णिमा को कोजागिरी कहा जाता है।ऐसी मान्यता है इस दिन चन्द्रमा अमृत वर्षा करता है। अमृतपान के लिए लोग रात्रि 10 बजे के बाद खुले आसमान के नीचे खीर आदि पकाते हैं।

कार्तिक स्नान–

कार्तिक मास भगवान विष्णु के प्रति समर्पण,निष्ठा व भक्ति का मास है।पूरे माह भर लोग सुबह 4–5 बजे उठकर स्नान करते हैं,पूजा–अर्चना करते हैं।गॉवों में प्रतिदिन सुबह–सुबह डिंडी भी निकाली जाती है।

नागपंचमी–

जनमेजय नागयज्ञ कर रहा था। जनमेजय का गुरू आस्तिक महर्षि समाज के टुकड़े होते देख जनमेजय के सामने जाकर खड़ा हो गया और बोला–मुझे भी ज्वाला की भेंट चढ़ा दो।मैं भी नागकन्या के गर्भ से पैदा हुआ हूँ। जनमेजय की ऑखें खुल गईं।विश्ववंद्य आस्तिक जिस जात में पैदा हुआ वह जाति निम्न कैसे?जनमेजय ने आस्तिक के पैर पकड़ लिए। नागयज्ञ बंद हो गया।इस तरह नागपंचमी आर्य और नागजातियों की एकता का प्रतीक पर्व है।

नाग को खेती का देवता माना जाता है।उसकी पूजा अर्चना करने के उद्देश्य से नागपंचमी पर्व मनाया जाने लगा।

पोला–

बैलों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने का पर्व है पोला।इस दिन उनसे कोई काम नहीं लिया जाता।स्नान आदि कराने मे बाद उन्हें सजाया संवारा जाता हैं। शाम को पूरे गॉव के बैल एक निश्चित स्थान पर एकत्रित किए जाते हैं तथा उनकी सामूहिक पूजा अर्चना की जाती है।इस पूजा के बाद उन्हें घर–घर ले जाया जाता है जहॉ उनकी पूजा की जाती है और उन्हें पकवान खिलाए जाते हैं।

चंदन तिलक–यह शरीर भगवान का है।भगवान की सेवा में,संसार की सेवा में यह शरीर चंदन की तरह घिसता रहे।

भस्म– भस्म यज्ञ प्रतीक का रूपान्तरण है।कामना,वासना,राग,द्वेष जलाकर,भस्म करके ही निर्मल हुआ जा सकता है। भगवान प्राप्ति के लिए स्व की होली जलानी पड़ती है।

स्वस्तिक–

स्वस्तिक याने कल्याण।सबका शुभ,सबका कल्याण,सबका भला हो की भावना का प्रतीक। मंगल कार्य में यह सर्वत्र उपयोग में लाया जाने वाला प्रतीक।

होली–

फाग के जरिए मन में दबी विषयवृत्ति को बाहर निकालना और फिर होली में जला देना।अपने अंदर की आग बचाए रखना क्योंकि जब

तक अंदर आग है तभी तक जीवन है।ईश्वर प्राप्ति के लिए कामना,वासना,राग,द्वेष,ईर्ष्या,अहम् की होली जलानी पड़ती है।जलकर ही कंचन सा निखरा जा सकता है का प्रतीक पर्व है होली।

सच्चे मन से प्रभु को चाहने वाला प्रहलाद की तरह आग में से भी जिंदा निकल आता है,जबकि आग में न जलने का वरदान प्राप्त होने पर भी उसका गलत उपयोग करने पर व्यक्ति होलिका की तरह जल सकता है।

मटका–

शवयात्रा मे मटका आगे ले जाने का तात्पर्य है मिट्टी की काया का मिट्टी में मिल जाना।

भरा घड़ा–

भरा घड़ा मंगल की प्रतीक है।जीवन भरा–भरा रहे तभी मंगल है।खाली होना अमंगल का सूचक है।

बॉटने का सुख–

भगवान कृष्ण बचपन से ही माखन,दूध ,दही बॉटकर खाने का संदेश देते हैं। दूसरों की हित चिंता करना अपना लोक तथा परलोक सुधारना है।पूजा अर्चना के बाद या तीर्थयात्रा से लौटने पर भगवान का आशीर्वाद स्वरूप प्रसाद सबमें बॉटना लोक कल्याण की ही भावना का सूचक है।

संबंध–

संबंधों से नवीन उत्साह,उल्लास,उमंग एवं स्फूर्ति मिलती है।संबंध हमें जोड़ते हैं।इसीलिए संबंध जोड़ने के पूर्व काफी सावधानी बरती जाती है।संबंध भावनाओं के गूॅथने,विचारों के मिलने तथा संस्कारों के जुड़ने से सधते हैं।सुखद संबंध एक तरह की साधना है।

संबोधन–

संबोधनों का पवारी में पूरा का पूरा सामाजिक संसार ही है। मॉ–पिताजी, भाई–बहन, ताऊ–ताई, काका–काकी, फूफा–फूफी, बुआ,दीदी, दादा–दादी, नाना–नानी, समधी–समधन, साला–साली, साढू,अक्कड़

सास, सास–ससुर, सलहज, मामा–मामी आदिसंबोधन इसकी समृद्धि का प्रतीक है। संबोधनों के उच्चारण के साथ ही साफ हो जाती है संबंधों की सहजता, पारम्परिकता, निकटता, एक–दूसरे को समझने की प्रवृत्ति और बलिदान की भावना।

शब्द–

शब्द दो लोगों को करीब ला सकते हैं और उन्हें अलग भी कर सकते हैं।अच्छे शब्दों का असर दिल और दिमाग पर अंकित होकर सुनने वाले को अभिभूत कर जाते हैं। अच्छे शब्द अजनबी को भी अपना बना देते हैं।

अखेजी–अक्षय तृतीया को अखेजी या आखतीज कहा जाता है।यह दिन मंगल कार्यों के लिए शुभ माना जाता है।

दशहरा–

सुविधा की दृष्टि से इसे दसेरा भी कहा जाता है।न्याय की जीत और नारी जाति के अपमानकर्त्ताओं के संहार का प्रतीक पर्व है दशहरा।क्षत्रिय होने के नाते इस दिन हथियारों की पूजा भी की जाती है। चूॅकि अब खेती–किसानी की जाने लगी है, अतः अब हथियारों की जगह खेती से जुड़े उपयोगी औजारों की पूजा की जाने लगी है।

भाईदूज–

बहन द्वारा भाई को अपने घर आमंत्रित कर उसके सुखमय जीवन की कामना करना।कहा जाता है कि बहन यमुना को अपने भाई यमराज को अपने घर आने हेतु काफी अनुनय विनय करना पड़ा था। यमराज को मृत्यु का देवता कहा जाता है। वह अपनी बहन के घर जाना नहीं चाहते थे पर बहन के अनुरोध के आगे अंततः उन्हें झुकना पड़ा था।वास्तव में, यह प्रसंग काल के प्रति बोध की जाग्रति का प्रतीक है। काल का बोध अंहकार से मुक्ति दिलाता है। कहते हैं, यमराज ने अपनी बहन को आशीर्वाद देते हुए कहा था इस दिन जो भी बहन अपने भाई की पूजा करेगी उसका काल भी बाल बॉका नहीं कर पाएगा।

गोवर्द्धन पूजा–

दीपावली (लक्ष्मी पूजा) के दूसरे दिन गोवर्द्धन पूजा का पर्व मनाया जाता है।घर के दरवाजे पर दोनों ओर गोबर से बनी गोवर्द्धन डाली जाती है जिसमें गृह कार्य से जुड़े कार्यों की प्रतिकृति बनाकर पूजी जाती है।प्रतीकात्मक रूप से इसमें गोधन की वृधि की कामना की जाती है।इसीलिए इस पर्व को गोधन पूजा भी कहा जाता है।

तीज–त्योहार–

तीज–त्योहार से व्यवहार में तेज आ जाता है।जीवन के प्रति सोच और समझ में अंतर आ जाता है।हर काम को त्योहार की तरह करने पर वह काम न रहकर आनंद हो जाता है।त्योहार अंदर की उदासी को हरकर नए उत्साह और उमंग से भर देता है।इसीलिए तीज–त्योहारों की जीवन में व्यवस्था की गई है।मुंडन संस्कार–शिशु का मस्तिष्क व बुद्धि पुष्ट कर मलिन संस्कारों से मुक्त करने का प्रयास।

हॅसी–ठिठोली–

हॅसी हमारी आत्मा का संगीत है। जब हॅसी हमारे अंतर्मन को छूती है,हमें दूसरे लोगों के करीब ले जाती है,तब हम खुद को भी भूल जाते हैं।पवार समाज में कुछ रिश्ते ही हॅसी ठिठोली के लिए जाने जाते हैं जैसे– देवर–भाभी,जीजा–साला,जीजा–साली,समधी–समधन।विवाह अवसर पर गाई जाने वाली पैयलोड़ी(पहेली)हॅसी मजाक से भरपूर होती है।होली हॅसी–ठिठोली का त्योहार ही है।

सकरात–

मकर संक्रांति को सकरात कहा जाता है।यह सूर्य के तेजस की स्तुति का पर्व है।सकरात से सूर्य की उष्मा हॅसती,गाती,इठलाती धरती पर आती है।यह उष्मा तन–मन को गुदगुदाती है,जगाती है। कृषि कार्य के लिए सूरज की उष्मा का बड़ा महत्व है।

गिर्हान–

ग्रहण को उच्चारण की सुविधा के लिए गिर्हान कहा जाता है।सूर्य किरणों के पृथ्वी पर न आने से पृथ्वी व्यथित हो जाती है।वनस्पतियां

मुरझा जाती हैं।ग्रहण के बाद स्नान,पूजा अर्चना व दान की प्रथा है।

वसंत पंचमी–

वसंत आशावाद का प्रतीक है।पतझड़ के बाद वसंत का आगमन निराशा के बाद आशा के आगमन का प्रतीक है।वसंत का आगमन जीवन में उत्साह और उमंग का आगमन है। वसंत पंचमी को भसम पंचमी भी कहा जाता है।इस दिन कामदेव ने शिव की तपस्या भंग करने के लिए अपने काम बाण चलाकर शिव को क्रोधित कर दिया था।फलस्वरूप शिव का तीसरा नेत्र खुलने से कामदेव जलकर भस्म हो गए थे।

गले लगाना–

गले लगाने को भेंटना भी कहा जाता है। बेटी जब ससुराल जाती है तो वह मॉ के साथ–साथ अपनी सखी–सहेलियों से भी भेंटती है।गले लगाने से भावनात्मक जुड़ाव का अहसास होता है।यह व्यक्ति को सामाजिक,सुरक्षात्मक और भावनात्मक बल प्रदान करता है।

राखी–

राखी को रक्षाबंधन कहा जाता है। बहन अपने भाई की पूजा–अर्चना करती है और भाई उसकी रक्षा का संकल्प लेता है।आततायियों से अपनी बहन को बचाने के लिए लिया जाने वाला यह संकल्प पर्व संभवतः आक्रमणकारियों के आगमन के बाद से प्रारंभ हुआ प्रतीत होता है।

कांकण–तोरण सिराना–

विवाह के समय बॉधे जाने वाले कांकण–तोरण को समारोहपूर्वक जल स्रोतों में विसर्जित किए जाने का विधान है।जल के प्रति सम्मान का भाव बना रहे व जल स्रोतों को स्वच्छ तथा पवित्र बनाए रखने का संकल्प लें इसमें यह भाव छिपा है।

डिंडी निकालना–

कातिक में पूरे माह भोर के पूर्व स्नानादि से निवृत्त हो सामूहिक रूप से भजन–कीर्तन करते मंदिर जाना।

कढ़य करना–

मनौती पूरी होने पर संबंधित ईष्ट या देवता के सम्मान में लिए गए संकल्पानुसार प्रसाद चढ़ाना व गरीबों में वितरित करना।

चुट्टी निकालना–जन्म के बाद संतान के पहली बार बाल चढ़ाने, ज्वार निकालने की रस्म।

गाड़ा खींचना–

महामारी से छुटकारा प्राप्त करने के लिए मरी माय से मन्नत मानना। मन्नत पूरी होने पर मरी माय के सम्मान में गाड़ा खींचने की रस्म।

नस–नाड़ी जानना–

व्यक्ति की एक–एक चीज से वाकिफ होना।

तप–

व्यक्ति का जीवन ही तप है। कष्ट साध्य कार्य ही तप है। तप जन्म से निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। चलना,फिरना,दौड़ना,भागना तप है।जीवन जीना भी तप ही है। दूसरों के काम आना भी तप ही है। जीवन का कोई भी काम तप के बिना पूरा नहीं होता।शिक्षा तप है।विवाह करके दाम्पत्य जीवन निभाना तप है।बच्चों का लालन–पालन करना मॉ का तप है।तपने पर ही सोना निखरता है।तपकर ही जीवन निखरता है।तप जंगल में जाकर की जाने वाली साधना नहीं है।तप कहीं भी रहकर की जा सकने वाली साधना है।किसान का खेती करना तप है।

एक बार नारद को अपने तप पर घमंड हो गया। उसने प्रभु से पूछा–प्रभु आपका सबसे बड़ा भक्त कौन है?प्रभु ने कहा–किसान।नारद को इसकी अपेक्षा नहीं थी।नारद ने कहा–प्रभु मैं तो दिन रात आपकी भक्ति में डूबा रहता हॅू फिर यह किसान मुझसे बड़ा भक्त कैसे हो गया जबकि यह तो दिन रात खेती करते रहता है।प्रभु ने कहा–नारद,तुम ऐसे नहीं समझ सकोगे। ऐसा करो, यह तेल का भरा कटोरा लेकर जाओ और इस गॉव का पूरा चक्कर लगाकर आओ। ध्यान रहे,तेल की एक बूॅद भी कहीं गिरनी नहीं चाहिए। नारद ने कहा–इसमें कौन सी बड़ी

बात है,और ऐसा कहकर नारद हाथ में तेल का कटोरा लेकर गॉव का चक्कर लगाने निकल पड़े। नारद तेल की एक बूॅद गिराए बिना प्रभु के पास जा पहुॅचे तो उनकी खुशी का कोई ठिकाना न रहा।प्रभु बोले–नारद,यह तो बताओ,जब तुम तेल का कटोरा लिए गॉव का चक्कर लगा रहे थे तब तुमने प्रभु का नाम कितनी बार लिया।नारद बोले–प्रभु,मेरा पूरा ध्यान तो तेल को संभालने में लगा हुआ था,ऐसे में मैं आपका नाम कैसे ले सकता था।प्रभु को मानो इसी क्षण की प्रतीक्षा थी वे बोले–नारद,जब किसान का मन दिन रात खेती करने में लगा रहता है तब वह प्रभु का नाम कैसे ले सकता है?नारद को चुप देख प्रभु आगे बोले–नारद,मेरा दिन रात नाम लेना तप/जप नहीं है,जो काम जिस व्यक्ति का है वह उसे पूरा मन लगाकर करे वही तप/जप है।

बोली/भाषा अज्ञान का निवारण करती है। कोश के निर्माण से बोली/भाषा का बल नहीं बढ़ता। कोश के शब्द निर्जीव होते हैं। जब उन्हें कवि,चिंतक,वक्ता आदि की कल्पना की गर्मी के नीचे आने का अवसर मिलता है तब उनमें जीवन फूटता (आता) है।

बोलों के आगे कोष्ठक में संबंधित बोली भाषा का संक्षिप्त रूप दिया गया है जिसका अभिप्राय निम्नानुसार है–

अ – अरबी।

अं – अंग्रेजी।

फा – फारसी।

तु – तुर्की।

सं – संस्कृत।

म – मराठी।

अ

अऊत – हल,बक्खर।
अक्सेद – अक्षत,निमंत्रण।
अकल – बुद्धि
अखाड़ी – साल का पहला त्योहार।
अचकचाना – मनोबल टूट जाना।
अर्दली – देखरेख।
अरक – रस
अर्रक बोदा – अड़ियल व संवेदनाहीन।
अलाव – तापने के लिए जलाया गया
अर्जी – प्रार्थना पत्र।
अम्बाड़ी – सन प्रजाति का पौधा।
अदब – सलीका
अफरातफरी – गोलमाल।
अफवाह – उड़ती खबर
अफसोस (अ) – दुख,खेद।
अधाड़ घर – घर के बीच का भाग।
अधेला – उत्पादन का आधा।
अघाड़ी – आगे।
अघाना – तृप्त होना।
अंडबंड – असंगत,गाली गलौच।
अड़सय – मारना।
अड़ोसपड़ोस – आसपास।
अपनो – अपना।
अकाश – आकाश।
अंधड़ – आंधी।
अंगठा – अंगूठा।
अंगोछा – कंधे पर डालने वाला कपड़ा।

अक्क्ड़ सास – पत्नी की बड़ी बहन।
अरन पपय – पपीता।
अरण्डी – तिलहन।
अलोनी – नमक कम होना।
अरबट – हठीला।
अधमरो – अधमरा।
अन्नाई को ढेकना – ऊधमी।
अष्टी चंगा – एक प्रकार का खेल।
अंधन – दाल – चावल पकाने के पूर्व पानी गरम होने रखना।
अदना (अ) – छोटे कद का।
अंगा – वस्त्र।
अंधेर – अनीति।
अकड़ – घमंडी,गर्व,गुमान।
अकडू – अकड़ने वाला।
अखंड – सम्पूर्ण,निर्विघ्न।
अर्थी – शव।
अर्राना – चिल्लाना।
अलबत्ता (अ) – बेशक।
अड़ंगा – अवरोध।
अवगुण – दोष,बुराई।
अवलट – उल्टा।
असर (अ) – प्रभाव।
असली (अ) – सच्चा।
अस्तर (फा) – सिले कपड़े के भीतर की तह।
अहम् – खास,महत्वपूर्ण।
अंटी – गॉठ।
अदमी – आदमी।

अग्गिन – जलन।
अड़स – चुस्त,तंग,जड़ना।
अवड़त – संभलना।
अड़दड़ा – एक नक्षत्र।
अटक्या – अटकना,काम रूकना।
अड़ाना – टिकाना,अनिर्णय की स्थिति।
अटाटूट – बेशुमार।
असो – इस तरह।
अवार – घर।
अगाजना – प्रसिद्धि पाना।
अवंदा – इस वर्ष।
अम्बार (फा) – ढेर।
अवल – अच्छा।
अवड़य – संभलना।
असुक – बुखार।
अवदशा – मुसीबत।
अदाउत – दुश्मनी।
अंगारा – अंगार।
अडवार – ओरिन में लकड़ी आदि रखना।
अड़सटटा – गिरफ्त।
अकार – सलीका।
अंदाजा (फा) – अनुमान।
अंदेशा (फा) – आशंका,संदेह।
अबीर – गुलाल।
अरमान – इच्छा।
अग्गिन होय – चुनचुनाना,जलन।
अर्ज (अ) – निवेदन।
अघोरी – मलिन,घृणित।

अजीब (अ) – अनोखा।
अजूबा (अ) – आश्चर्य।
अटकना – रूकना।
अटपटो – विचित्र।
अटाला – ढेर।
अड़ंगा – रूकावट।
अड़नो – जिद।
अड़ियल – रूकने वाला।
अड़बंग – टेढ़ा,कुटिल।
अड्डा – स्थान।
अदबी (अ) – विनयी।
अदा (अ) – देना,चुकाना।
अदालत (अ) – कचहरी।
अधीन (सं.) – आश्रित।
अनबन – झगड़ा।
अनमेल – बेमेल।
अनमनो – खिन्न,उदास।
अन्न – अनाज।
अपनो – स्वयं का।
अपाहिज (सं) – अपंग।
अपेक्षा (सं) – चाह,आशा।
अफसर (अं) – अधिकारी।
अफसरी (अं) – अधिकार।
अमन (अ) – चैन,शांति।
अमर (सं) – न मरने वाला।
अमीर (अ) – धनी।
अरमान (फा) – लालसा,इच्छा।
अवलट – उल्टा।

अवटय – गाढ़ा करना।

आ

आगदा – सूप में अनाज भरकर देना।
आरा – आहट।
आगी – आग।
आघ् – आगे।
आवय – आना।
आखुड़ – छोटा।
आसरा – आश्रय।
आयता – एक व्यंजन।
आंजय – काजल बनाना।
आर – बैल आदि को हॉकने की लकड़ी में लगी लोहे की कील।
आम्बा – आम।
आंगल – ऑगन।
आटय – बुनना,बनाना।
आटा – साटा – बहन – भाई की एक ही घर में शादी।
आरन – सब्जी में बेसन का घोल लगाना।
आड़ो – तेढ़ो – तेढ़ा तिरछा।
आक – बैलगाड़ी के पहिये का अक्ष।
आरी – काटने की छोटी आरी।
आंग – शरीर।
आंगधोना – स्नानघर।
आंड – पुरूष जननांग।
आंजुर – अंजुली।
आड़ा – घर की मुख्य लकड़ी।
आगल्यो – आगे का।
आननफानन (अ) – बात बात में।

आफत (फा) – मुसीबत।
आमद (फा) – आगमन,आय।
आमदा (फा) – तैयार,उद्दत।
आल्ता – आलेप।
आसार (फा) – चिह्न,निशान।
आकरी – भूख।
आरसा – आईना,दर्पण।

इ

इत् – इधर।
इत् उत् – इधर – उधर।
इल्लत – झंझट।
इतल्ला – खबर,सूचना।
इतराना – गर्व करना।
इल्ला – इल्ली से बड़ा।
इल्ली – इल्ली।
इस – खाट की लकड़ी।
इसार – उपर से चढ़ाना।
इनाम – पुरस्कार।
इमली – इमली।

ई

ईमान – कर्त्तव्य निष्ठा।
ईख – साटा।
ईंट – ईंट।

उ

उकलय – खोलना।
उगना – निकलना।

उघाड़ – खोल।
उघाड़ना – खोलना।
उत् – उस तरफ।
उपद्रा – उपद्रव,झंझट।
उइरना – पीसते,बोते समय अनाज डालना।
उचटना – मन न लगना।
उपसना – निकालना।
उपसा – मिट्टी का ढेर।
उन्हारी – काली मिट्टी की जमीन।
उन्हारा – गर्मी।
उन्हारा – हिवारा – गर्मी – सर्दी।
उदबत्ती (अ) – अगरबत्ती।
उड़वा – कंडे का ढेर।
उम्बी – गेंहूँ की बाली।
उम्बर – गुल्लर।
उभारनी – गाड़ी में लगी लकड़ी।
उभो – खड़ा।
उतारा – पहली बारिश के बाद उगा नींदा।
उतानो – चित सोना।
उतरन – फटे – पुराने कपड़े।
उरबी – जानबूझकर।
उस्ताद (फा) गुरू,प्रवीण।
उतरना – नीचे आना,आम का अधिक पक जाना।
उतारना – नीचे लाना।
उरबी उरबी – जानबूझकर।
उफान – उबाल।
उल्टी – वमन,कै।
उपला – कंडे।

उपास – उपवास।
उपासी – भूखे पेट।
उन्द्रा – मूसा,चूहा।
उक्ताना – उब जाना।
उड़नखटोला – हवाई जहाज।
उड़ानी – हवा में अनाज साफ करना।
उसो – उसी तरह।
उखड़नो – उबालना।
उद्धय – दीमक।
उदवास – अनुभव।
उबारा – आग की ज्वाला।
उबजना – तरल पदार्थ लगने से फोड़े – फुंसी होना।
उसरी – कैरी की सूखी टुकड़ी।
उपत – खुदबखुद
उघड़ो – खुला।
उबरना – मधुमक्खी का अचानक उड़ना।
उट्ठक बट्ठक – उठना बैठना।
उम्मीद (फा) – आशा।
उलटाना – फेरना,पलटाना।
उखाड़पछाड़ – आलोचना।
उक्कीर – चूहे का बिल, दर।
उद्धय – दीमक।
उजाना – पानी में सिराना।
उन्ना – पूर्रा – सम विषम का खेल।
उकलना – खोलना।
उस्या – सिरहाना।
उंदरकाट – चूहे द्वारा फसल को नुकसान पहुँचाना।
उधड़ा – निश्चित मजदूरी पर काम कराना।

उलीचना – खाली करना।

ऊ

ऊँघना – आलसी करना।
ऊटपटांग – बेढंगी।
ऊजाड़ – उजड़ा हुआ।
ऊबड़खाबड़ – असमतल।
ऊँचनीच – जातपॉत।
ऊबाऊ – नीरस।
ऊप्पर – ऊपर।

ए

एकपावली – पगडंडी।
एलची (तुर्की) – दूत,राजदूत,नटखट।
एक्का – धार्मिक आयोजन,यज्ञ,ताश का पत्ता आदि।
एसन – बैल के नथूने बेधकर डाली गई रस्सी।
एकानी – एकानी – एक एक करके।
एड़ी – तलुए का पिछला उभरा भाग।
एड़ – आघात,पैर से नियंत्रित करना।
एखलो – अकेला।
एना कोदी – इस तरफ।
एब – दोष,अवगुण।

ऐ

ऐंद्या – गुड़ बनाने के लिए रस को गरम करने वाला।
ऐंदी – गुड़ बनाने के लिए रस को गरम करना।
ऐंचय – खींचना।
ऐंचातानी – खींचातानी।
ऐन (अ) – ठीक,सही।

ऐनक (फा) – चश्मा।
ऐयना – आईना।
ऐब – दोष,बुराई।
ऐयार – धूर्त,चालाक।
ऐय्याश – भोग विलासी।
ऐरा – गैरा (अ) – बाहरी,निकृष्ट।
ऐश (अ) – भोग – विलास।
ऐसीतैसी – एक प्रकार की गाली।
ऐसीतैसी में जाए – भाड़ में जाए।

ओ

ओक – अंजुरी,उल्टी।
ओखरी – ओखली।
ओंगन – पहिए को तेल देना।
ओज – डाल,उलेड़।
ओरफाट्या – उंगली की पोर से बने निशान।
ओल – गीलापन।
ओलना – सिंचाई करना,फसल को पानी देना।
ओट – आड़।
ओझा – भूमका।
ओना कोदी – उस तरफ।
ओटा – आंचल, बोते समय बीज रखने हेतु कमर को बॉधा जाने वाला कपड़ा।
ओठला – चबूतरा।
ओल्लो – गीला।
ओछो – छोटा,आखुड़।
ओरपना – सोड़पा मारकर खाना।
ओरांगनी – कपड़े टॉगने की लकड़ी।
ओंधोउबड़ो – उलट – पलट होना।

ओरिन – खपरैल से पानी गिरने की जगह।
ओत्ती – उतनी।
ओन साल – उस साल।
ओसारी – घर में बैठने की जगह।

औ

औकात – हैसियत।
औकार – बाह भर।
औंदा – इस वर्ष।
औंधा – मुँह के बल।
औना – पौना – आधे दाम पर,बिना लाभ के।
औलाद (अ) – संतान।
औझड़ – बंझड़ – बेबुनियाद।
औझड़ – बंझड़ – अशिष्ट।
औलट – उल्टा।
औकार – दोनों हाथों में लेना।

क

कइच – कुछ।
कंकड़ – पत्थर के छोटे टुकड़े।
कंगूरा – मंदिर की चोटी।
कगार – किनारा।
कड़लो – कड़ा।
कड़पा – कटी फसल के छोटे ठेर।
कड़बा – ज्वार के ढांडे।
कड़य – मालूम,समझ।
कड़्या बठनूं – भूट्टे का आना।
कड़्या लेनूं – कमर पर बिठाना।

कढ़य करनूँ – पूजा के लिए प्रसाद बनाना।
कनखी – तिरछी नजर।
कचूमर – मार से बना भर्ता।
कड़सड़ – जले का स्वाद।
कलावय – मिलाना।
कम्मर – कमर।
कनारह्य – बीमारी में दर्द भरी आवाज करना।
कण – छोटा,सूक्ष्म टुकड़ा।
कणिक (सं) – आटा।
कर – पोले के दूसरे दिन जिसपर जुआ खेला जाता है।
करम – कर्म।
करतूत – बुरे कर्म।
करदोड़ा – कमर में बॉधा जाने वाला धागा।
करवा – मिट्‌टी का छोटा घड़ा।
करवाठय – एक त्योहार।
कषा गयो – कसैला होना।
कसा – रस्सी।
कसा – कैसे।
कसाट – बैल के गले की घंटी।
कटारा छूटय – ठंड लगना।
कंगाल – अत्यधिक गरीब।
कंतरी – चालाक।
कंद – कंदमूल।
कंदील – लालटेन।
कंदराय – बेचैन होना।
कपट – कपट
कपार – मस्तक।
कंदलो – गंदा,मैला।

कद काठी – डीलडौल।
कचेरी – कचहरी।
कटकट – व्यर्थ का विवाद।
कवरा – कोमल,नरम।
कमची – बॉस की पतली खपची।
कसा – नाड़ा।
कलेवा – सुबह का नाश्ता।
कच्चो – कच्चा।
कबूलना – स्वीकारना।
कड़ – करवट।
कंटारय – जी उबना।
कल्ला – शोर।
कन्हारय – कराहना।
कसट – मेहनत।
कमीज – शर्ट।
कमीन – नीच।
कमीनापन – नीचता।
कड़ – करवट।
कड़य – समझना।
कड़ कड़ – टूटने की आवाज।
कड़छी – चम्मच।
कढ़य – कढ़ाई।
कबाड़ा – गड़बड़।
कड़ीदम – बिल्कुल।
कड़ीबंद – सुरक्षित।
कनपटी – कान – गाल पर।
कना – कान का मैल।
कलावा – सूत का लच्छा।
कलावा – गिला करना,भिगाना।

कागजात (फा) – चिट्ठी पत्री।
काचा – दूध भरे थन।
काथड़ी – गुदड़ी।
कारबारी – मुखिया।
कारोबार – व्यवसाय।
काश्तकार (फा) – किसान।
काश्तकारी (फा) – किसानी।
कायदा (अ) – नियम।
कांजीहाउस (अं) – मवेशीघर।
काटनी – कटनी।
कांगालोर – रोते – रोते लोटपोट होना।
काजर – काजल।
कागूर – पूर्वजों का पूजन पर्व।
कापूस – कपास।
काप्टा – चोली का कपड़ा।
कास्टा – लुगड़े की तह जिसे कमर में खोंचा जाता है।
काड़ी – माचिस की तीली,लकड़ी।
काठा – बर्तन का किनारा।
कांदा – प्याज।
कारना – वेदना।
कारस्तानी – करतूत।
कारो – काला।
काना – एक ऑख का।
कानी – एक ऑख की।
कांडी – गेहूॅ के पौधे के डंठल।
किंदलो – गंदा।
किंटारना – उब जाना।
किलपना – विलाप करना।
किल्लत (अ) – तंगी,कमी।

किवाड़ – दरवाजा।
किसनी – किसने वाली।
किनोर – किनारा।
किरम – पेट के कीड़े।
किरीम – किरण।
किरीम फूटना – दिन निकलना।
किरीट – मुकुट।
किस्मत (अ) – भाग्य।
किड़लू कांटा – जीव जन्तु।
किलिप (अ) – क्लिप,बालों में लगाने वाला।
किलचा – लकड़ी का धारदार कटा पतला टुकड़ा।
कीड़ा – कीट।
कीव – दया।
कुन्बी – एक जाति।
कुन्बा – वंशज।
कुई – कोई।
कुबत – हैसियत।
कुदारी – कुदाली,कुदाल।
कुरोड़ी – गेहूँ के खट्टे पापड़।
कुटार – भूसा।
कुरला – कुल्ला।
कुंदा – लकड़ी का लट्ठा,लोहे का हुक।
कुलहाट – उलटना – पलटना।
कुलहाड़ी – लोहे का धारदार हथियार।
कुम्हड़ा – कद्दू।
कुलबुलाहट – कुलबुलाने की क्रिया।
कुसरा – घास का नोकदार बींज।
कुपरन – अंग्रेजी के वाय आकार की जमीन में छेद करने की वस्तु।

कुटकी – सावे जैसा बारीक अनाज।
कुंजी – चाबी।
कुश्ती – लड़ाई।
कुचड़ा – पत्ते मुड़ने का रोग।
कूच – रवानगी।
कूबत – सामर्थ्य।
केवटी – मिश्रित दाल।
केवट – नाविक।
कै – वमन,उल्टी।
कोन्या – कोना।
कोण्टा – कोना।
कोल्हया – कम्बल कीड़ा,सियार।
कोम – अंकुर।
कोंडना – बंद करना।
कोंदारा – हल्ला।
कोलपाट – चौकी।
कोगली – गले का अंदर का भाग।
कोंडा – चावल के छिलके का महीन भूसा।
कोठा – जानवरों का आवास स्थान।
कोचोड़ा – घोंसला।
कोलवा – नीची जमीन।
कोहम्यो – कुनकुना।
कोह्यनी – कोहनी।
कोन – कौन।
कोरस्या – कोयला।
कौटा – बाह भर।
कौरा – कच्चे,नरम।

ख

खटपट – सेवा,उठापटक।
खनमाटी – विवाह की एक रस्म।
खटका – शंका।
खंड्यो – रूकना,कमजोर।
खडागरी – गिलहरी।
खटीक – केजूस।
खलूस – नीचे।
खंती – मिट्टी खोदने से निर्मित गड्ढा।
खत्तू – जू के अंडे।
खखार – कफ।
खरय – फसल का ढेर।
खसमस – झूम के।
खखरी – टहनी।
खट्टो – खट्टा।
खली – ढेप।
खड़बड़ो – असमतल।
खदा खवार – खराब,गंदा।
खद्यो – खराब।
खरड़ ख – नीचे तक का।
खप्ती (अ) – सनकी।
खसम (अ) – पति।
खल्टी – सूखी पपड़ी।
खखाना – कूड़ा करकट।
खबरमात – समाचार।
खटोला – छोटा आसन।
खटोली – छोटी खटिया।
खटिया – खाट।

खाज – खुजली।जेख् खाज तेख् नी लाज।
खाट – खटिया।
खापरी – मिट्टी का तवा।
खांदा – कंधा।
खाखरी – कटी टहनी।
खानदान (फा) – कुल,वंश।
खिरना – कपड़े का कमजोर होकर फटना।
खिल्ला – कील।
खिल्ली – पहिए की कील।
खिचड़ा – गेहूँ की खीर।
खिदमत – सेवा – सत्कार।
खिल्टा – घाव की सूखी पपड़ी।
खीरा – कुरोड़ी का पाक।
खीसा (सं) – जेब।
खुनूस – गुस्सा।
खुजा ख खता करनूँ – अपने हाथ गल्ती करना।
खुटाऊपाड़ – निठल्ला,बदमाश।
खुरापाती – उधमी,उपद्रवी।
खुकड़ा – खुकड़ी – मुर्गा – मुर्गी।
खुशामद – विनय,अनुनय।
खुपसना – घुसाना।
खुइरखाइर – चम्मच चलाकर।
खुदरा – चिल्लर।
खुरमा – सूखे खजूर।
खुरपी – घास छिलने का औजार।
खुरचन – खुरचने पर निकला माल।
खुल्लो – खुला।
खूबी – विशेषता।
खूंदना – रौंदना।

खूड़ना – पत्ते – पत्ते तोड़ना।
खूड़ी – आम उतारने का औजार।
खूब – बहुत अच्छा।
खो – खो – एक प्रकार का खेल।
खो खो – बंदर की आवाज।
खोड़ – सूखा पेड़।
खोंद – खोदना।
खोंदरा – गड्ढा।
खोपा – बॅंधे बाल।
खोट – कमी,दोष।
खोड़ांग – वाफे का ऊँचा हिस्सा।
खोंचना – लगाना।
खोड्या – दूसरे वर्ष की गन्ना बाड़ी।
खोबा – लकड़ी का नुकीला भाग,उलझन भरा।
खोंदकरी – गन्ना काटने वाला।
खोपरा – नारियल गिरि।
खोबरा – नारियल का टुकड़ा।
खोदाबीदी – राज लेना।
खोवा – मावा।
खोली – कमरा।
खोली – खोलकर देखना।
खोर – जिसमें झूले में बच्चे को सुलाना।
खोज खबर मिटाना – जीवन से हटाना।
खौवा – बाजू।

ग

गच्चा – जोखिम,धोखा।
गच्चा – गड्ढा।
गदरायो – अधपका।

गद्दा – बिछाने के काम में उपयोगी।
गंवार – गॉंव का।
गवसत – समझत।
गल – कुए में गिरी बाल्टी आदि निकालने का हुक।
गलत – सही का उलट।
गलतफहमी – दोनों के बीच सही का ज्ञान न होना।
गलीज – गंदा।
गलीचा – गद्दा।
गच्चा – हानि।
गमय – मन लगना।
गड़बड़य – लोटपोट।
गतर्या – गन्ने के छोटे टुकड़े।
गल्ली – गली।
गंधारी को सारपा – अनुशासनहीन बच्चे।
गड़ीगुप – चुपचाप।
गठ्यान – गॉंठ।
गत – दुर्दशा।
गढ़ा – गड्ढा।
गढ़ी – छोटा गड्ढा।
गरज – जरूरत।
गरीब गुरबा – अत्यधिक गरीब लोग।
गरम मिजाज – शीघ्र क्रोधित होने वाला।
गट्ठा – लकड़ी का बंडल।
गवसय – समझ।
गंडलना – सोना।
गरारा – कुल्ला।
गबरू – मोटा ताजा,ठूॅंसमूस।
गमछा – कंधे का वस्त्र।

गम्मत – नाच।
गरूर – अहंकार,गर्व।
गड़करी – गाड़ीवान।
गड़ाना – चुभोना,गाड़ना।
गंड – कठोर उभरा फोड़ा।
गजर – भोर में बजने वाला घंटा।
गड़ना – चुभना।
गनावय – लगुन गनाना,मुहुर्त निकलवाना।
गयो गुजर्‌यो – बेकाम।
गलाना – भिगाना।
गलाना – धातु आदि को पिघलाना।
गसना – कसना।
गस खा क गिरनो – बेहोश होना।
गारय – छानना।
गारा – कीचड़।
गार – चकमक पत्थर,ओले।
गारना (सं) – छानना।
गाटा – कीचड़।
गारद – पहरेदार,रक्षक।
गाकड़ – मोटी रोटी।
गाठी – हार।
गाड़ी – बैलगाड़ी आदि।
गाड़ा – बच्चों का खेल गाड़ा।
गाढ़ी – कम रसीली,मेहनत की।
गाठना – भोंदना।
गाभीन – पेट आना।
गाड़ना – गड़ाना।
गांड – पोंद।
गाड़गा – छोटा घड़ा।

गांडू – डरपोक,कमजोर।
गांजय – भाना।
गाज – बिजली।
गाभा – पेड़ का कोमल भाग।
गाली गलौच (फा) – एक दूसरे को अपशब्द कहना।
गाव्हय – फसल निकालना।
गायकी – ढोर चराने वाला,गाने वाला।
गिंडोरना – केचुआ।
गिरमा – जानवरों के गले में बॉंधी लाने वाली लकड़ी।
गिल्ली डंडा – एक तरह का खेल।
गिल्ली – गीली।
गिरगिट – सड़ल्या।
गिरेबान (फा) – गरेबान।
गिरस्ती – गृहस्थी।
गुल – चकमक पत्थर की रगड़ से उठी चिंगारी।
गुर्राना – बिल्ली की आवाज।
गुल्ली – महू का फल।
गुठला – चार – चिंरोजी का फल।
गुठली – फल की गुठली।
गुहान – सार,जानवरों के चारा डालने का स्थान।
गुहान को कुत्ता – न खुद खाय न दूसरा ख खान देय।
गुड़भात्या – फलदान।
गुजारा (फा) – निर्वाह।
गुताहे – फॅसना,उलझना।
गुदाम – बटन।
गुदगुदी – उंगली के स्पर्श से हॅसाना।
गुड़गुड़ाना – पेट की आवाज।
गुलाम – बंदी।
गुरू गुड़ चेला शक्कर – शिष्य का ज्यादा गुणी होना।

गैर (अ) – पराया।
गोदा – घोंसला।
गोंड – आदिवासी।
गोबर – गाय,भैस का पोयटा।
गोपाल – गाय पालने वाला।
गोभी – सब्जी।
गोखरू – गोखरू।
गोलादंग – गोलमटोल।
गोलमटोल – मोटा व स्वस्थ।
गोटा – पत्थर।
गोवर्धन पूजा – दीपावली का दूसरा दिन।
गोवर्धन – गाय की वृद्धि।
गोटमार – पत्थरमार।
गोंद – डीग।
गोंदारा – हल्लागुल्ला।
गोंदर – सोंग।
गोफन – पत्थर फेंकने का फांसा।
गोट – किनारी।
गोटी – छोटा कंकर,गोटी फिट करना।
गोधन – गाय बैल आदि।
गोबर गणेश – बुद्धु,अज्ञानी।
गोमितर – गोमुत्र।
गोंदा – गेंदा।
गोंगाटा – अस्तव्यस्त।
गौठ्यान – गायों को खड़ा रखने का निश्चित स्थान।
गौंदन – कुचला बचा चारा।

घ

घर – मकान।

घरबार – घर परिवार।
घरोबा – घर जैसा।
घपला – गड़बड़।
घमेला – तसला।
घमेला – धूप में जले हुए।
घरवाली – पत्नी।
घरवालो – पति।
घसना – घिसना,बॉटना।
घर बठना – विवाह करना।
घर बठना – तलाक होना।
घरघुसैल – घर में घुसने वाली।
घरघूस्या – घर में घूसा रहने वाला।
घनमकड़ी – धनुषाकार लकड़ी पर गोल – गोल घूमना।
घर जवाई – लड़की के लिए घर लाया दामाद।
घर की बात – आपस की बात।
घर की घर म रहिन देनूं – ढिंढोरा नहीं पिटना।
घरबठे – बिना प्रयास के।
घड़ी भर – थोड़ी देर।
घड़ी – समय बताने वाला यंत्र।
घमौरी – धूप,गर्मी से हुई फुंसी।
घसमस – बारीक पिसना।
घराती – घर के सदस्य।
घट – कलश।
घबड़ाय – घबराना।
घटिया – कमजोर,गिरा हुआ।
घरोबा – घर जैसा।
घमघम – तेज बास आना।
घड़ीघड़ी – बारबार।

घसियारा – घास काटने वाला।
घाई – जल्दीबाजी,शीघ्रता।
घाम – धूप।
घाना – गन्ने पेरने का कोल्हू।
घिसना – मांजना।
घिर्री – लोहे का छोटा चका।
घीउ – घी।
घिसरना – फिसलना।
घुग्गुस – उल्लू।
घुप्प – घोर।
घुंगरी – गेहूँ को उबालकर खाना।
घुड़ा – घुरा।
घुरय – घूरना।
घुड़की – धमकी,घोड़े की चाल।
घुरगेला – बैल के गले बॉधा जाने वाला ढोना।
घुमन्या – चुप रहने वाला।
घुमक्कड़ – घूमने – फिरने वाला।
घुड़सवार – घोड़े की सवारी करना।
घुसाना – जबरदस्ती करना।
घुस – नेवले की प्रजाति का एक जीव।
घुसाड़ना – जबरदस्ती भेजना।
घूस – ऊपर की कमाई।
घेंदा – कचूमर।
घेंघरा – चने व सन के फल।
घोड़ांग – तास किनारे की ऊँची मिट्टी।
घोड़ापछाड़ – घोड़े को पछाड़ने वाला।
घोड़ी – लकड़ी का खड़े रहने का तिहा।
घोटी – चने के घेंघरे।
घोटना – वश में करना,बुद्धू बनाना।

घोटना – चम्मच चलाकर मिलाना।

च

चकमा – झांसा।
चकमा देना – झांसा देकर भाग जाना।
चकचोंदी – उत्कट अभिलाषा।
चचरमचर – अनर्गल बातें करने वाला।
चतरी – चतुर स्त्री।
चतरो – चतुर।
चऊ – नागर की फाल।
चऊक – चौक।
चका – चक्का,पहिया।
चबराक – बातूनी।
चड्डी – अंडरगारमेंट।
चमार – एक जाति।
चंदरजोत – रतनजोत।
चटक – साफ,चमकीला।
चटका – तेज धूप का चुभना।
चटका – अंगारे का छू जाना।
चटकय – चट चट की आवाज।
चरका – तीखा।
चरकी – तीखी।
चरको – तेज,जलन,मिर्ची लगना।
चबरू – चबर चबर बोलने वाली।
चबरू – काट खाने वाली।
चसका – स्वाद।
चंदा – शुल्क।
चरोखर – चारागाह।
चपोटा – चपटा।

चखचख – कहासुनी।
चंद (फा) – थोड़ से।
चमन (फा) – फुलवारी,समृद्ध।
चरहाड़ी – पतली रस्सी।
चरहाट – मोटा रस्सा।
चबूतरा – ओठला।
चट – अचानक,एकाएक।
चट – जल्दी,चट मॅगनी पट शादी।
चंची – कई जेब वाली कपड़े की थैली।
चमेली – एक प्रकार का फूल।
चंपा – एक प्रकार का फूल।
चरचराना – तेल सूखने के कारण चके की आवाज।
चाट – चिकनी चुपड़ी बात।
चामठी – बांस की पतली पट्टी।
चामट – कड़ी व सूखी।
चालचलन – चरित्र,आचरण।
चाबय – दांतों से काटना।
चार चिरोंजी – चार।
चापड़या – चटाई।
चाटू – लकड़ी का चम्मच।
चाटली – लकड़ी की सलाक।
चाड़ा – अनाज बोने का लकड़ी का यंत्र।
चाटवन – चटा कर खिलाने वाली दवाई।
चाड़ी – फनल।
चॉदकी – छोटी रोटी।
चाबुक – घोड़ा हॉकने की सोटा।
चित – पट का उलट।
चित – मन।
चिवय – टपकना।

चिरकी – पतली धार।
चिराग (फा) – दीया,दीपक।
चिलम (फा) – हुक्का।
चिमटी – चिमटना,चिकोटी काटना।
चिच्चाय – चिल्लाना।
चिच – इमली।
चिवड़ा – कुचड़ा रोग।
चिपड़ा – ऑख की गंदगी।
चिरकुट – छोटा।
चिमटा – पकड़ने का औजार।
चिमटी – पकड़ने का छोटा औजार।
चिरखांडी – बैल का उछलकूद करना।
चिलियांगठी – छोटी उंगली।
चिकनी चुपड़ी – खुशामद भरी।
चिल्लर पार्टी – छोटे बच्चे।
चिल्लर – खुदरा।
चिल्लाय – चिल्लाना।
चिचोरा – गर्मी में आवाज करने वाला झिंगुर।
चिरमा – शैतान।
चिरमट – रसहीन,सूखा।
चिथड़ा – फटे, जर्जर।
चीची – शौच,टट्टी।
चींचीं – चिड़िया की आवाज।
चीर – फाक।
चीर – चीरने का कहना।
चीर – फाड़।
चीड़ी – चिड़िया।
चीड़ा – मेल चिड़िया।
चीपा – गन्ने का रसहीन छिलका।

चीमाना – मुरझाना।
चुंदी – चोटी।
चुरकू – छोटी टोकनी।
चुर – कण।
चुड़ना – दाल,सब्जी आदि का पकना।
चुरूड़मुरूड़ – मुड़ातुड़ा।
चुरका – बारीक।
चुरकू – छोटी डलिया।
चुरू – छोटी टोकनी,लोटा,हथेली का दोना आकार।
चुट्टी – चोटी निकालने का संस्कार।
चुहल – हॅसी – ठिठोली।
चुन्नाय – जलन होना,चुनचुनाना।
चुगलखोर – चुगली करने वाला।
चुगली – पीठ पीछे बुराई।
चुगली करना – एक की दो लगाना।
चूरी – बारीक कण।
चूर – कण।
चूरना – बारीक कण करना,मिलाना।
चेंगली – चिढ़ाना।
चेंदना – कुचलना,मारना।
चेंडू – गेंद।
चेचरना – थेथरना,कूटना।
चोट्टा – चोर।
चोट्टी – महिला चोर।
चोंभर – सिर पर गुंड या घड़ा रखने के लिए कपड़े की गोल रिंग।
चोमना – पुरूष जननांग।
चोमनी – स्त्री जननांग।
चोखना – चूसना।

चोंडक्या – एक वाद्य यंत्र।
चौकी – कोलपाट।
चौकी – चौरंग।
चौरंग – चौकी।
चौघान – मैदान।
चौपाया – जानवर।
चौपाई – रामायण रखने का स्टेण्ड।
चौपाई – चार पैर वाली,कविता आदि।
चौधरी – पटेल।
चौधराहट – पटेली।
चौखट – दरवाजा।
चौखट प नी आउ – डेहर नी डुकू,दरवाजे पर न आना।

छ

छबेला – बांस की कमची का बना ढक्कन।
छन्नो – साफ,छना हुआ।
छटेल – बदमाश,छंटी हुई।
छरबन – मैल की परत।
छन्न – गरम तवे पर बूँद पड़ने पर आने वाली आवाज।
छन्ना – साफ।
छड़ – राड।
छड़ी – लकड़ी।
छचलय – फैलना,बढ़ना।
छड़ीछाट – कुंवारी।
छड़ा – गोबर पानी के घोल का छिड़काव।
छकड़ा – छोटी बैल गाड़ी।
छत्ता – छाता।
छत्ता – मधुमक्खी का छत्ता।
छट – छट माता।

छट – साफ होना,हटना,
छट – अनाज को सूपा लगाने पर बचा कचरा व अनाज।
छटेल – छटी हुई,होशियार।
छर्रा – लोहे की छोटी गोली।
छानय – छानना।
छाबय – मिट्टी से छाबना।
छाबना – खुदे घर,दीवार आदि को गीली मिट्टी लगाकर ठीक करना।
छाना – मंडप आदि में पालवी छाना।
छानो – छत छाना।
छाल – पेड़ का छिलका।
छिड़कय – दवाई आदि छिड़कना।
छिछय – सींचना।
छिर्रोभोंदी – एक प्रकार का खेल।
छिलय – छिलना,छिलका उतारना।
छिबला – बांस का ढक्कन।
छिनाल – दूसरे व्यक्ति से संबंध रखने वाली।
छीत – छुआछुत।
छीताफल – सीताफल।
छी – छी – गंदी वस्तु देखकर नाक भौहे सिकुड़ना।
छींद – खजूर का पेड़।
छेंडा – आखरी छोर।
छेना – कंडा।
छैलछबेला – मजनूँ।
छोल – गन्ने के दिले पत्ते।
छोलकर – गन्ने छीलने वाले मजदूर।

ज

जगना – उठना।
जगाना – उठाना।
जप – नींद।
जप लग गई – नींद आ गई।
जप – भगवान का नाम लेना।
जबरदस्ती – ताकत के बल पर।
जबर (फा) – बड़ी,बलवान।
जताना – कह देना।
जनाउर – जानवर।
ज्याड़ दे – खाना खिला दे।
जरका – जोर का झटका।
जरा सो – थोड़ा सा।
जरसो – थोड़ी देर।
जड़ – भारी।
जड़ – आगे की ओर भार का अधिक होना।
जनवासा – बारात को ठहराने का स्थान।
जनना – जन्म देना।
जस को तस – जैसा का वैसा।
जगजग – प्रकाशमान।
जगमग – प्रकाश।
जवाब (फा) – उत्तर।
जहर (फा) – विष।
जहाज (अ) – जहाज।
जमानत (अ) – जिम्मेदारी लेना।
ज्योनार – भोज,रसोई।
जागरण – रात में जागना।

जाम – बिही,अमरूद।
जाहिल (अ) – अपढ़।
जायज (अ) – उचित।
जाय का – जा रहा क्या।
जाय हय – जा रहा।
जायजाद (फा) – जमीन।
जावन – आम पकने रखना।
जागल – फसल की रखवाली हेतु खेत में रात्रि विश्राम।
जालिम (अ) – अत्याचारी।
जायजा (अ) – परख करना।
जायका (अ) – स्वाद।
जागनेर – रात में जागना।
जिंदगी (फा) – जीवन।
जिम्मा (अ) – उत्तरदायित्व।
जिव – प्राण,मन।
जिवाड़नू – भोजन कराना।
जिगय – जगमगाना,प्रकाशित होना।
जिगरी (फा) – दिली।
जीवती – एक त्योहार।
जीव – प्राण,मन।
जीजा – बहनोई।
जीजी – बहन।
जुकाम (अ) – सर्दी।
जुर्म (अ) – अपराध।
जुर्माना (अ) – अर्थदंड।
जुल्म (अ) – अन्याय।
जुबान – हामी भरना।जुबान देना।जुबान रखना।
जूठोकाठो – जूठा।
जेल (अं) – कारावास।

जेवन – भोजन।
जेवनार – भोज।
जेजरा – बुरी तरह से पीटना।
जेजरा करना – मार से बदन का टूटना।
जेब गरम करनूं – घूस देना।
जेब हल्की करनूं – खर्च करवाना।
जोब – घास का मैदान।
जोर (फा) – बल,वेग।
जोंधरा – ज्वार।
जोतय – हल आदि जोतना।
जोरू – पत्नी।
जोरू को गुलाम – पत्नी के प्रति वफादार।
जोश (फा) – आवेश।
जौवा – गिलकी,ककड़ी आदि के छोटे व नरम नग।

झ

झक – बेकार का काम।
झक मारना – बेगारी करना।
झक मारना – एक प्रकार का व्यंग्य।
झकझक – कहासुनी।
झकझोरना – हिलाकर रख देना।
झकाझक – सफेद।
झंकार – झांझ आदि की आवाज।
झगड़ाझांसा – लड़ाई।
झन्ना जाना – झनझनाना।
झड़पी – गाड़ी का बांस का कवर।
झड़ना – गिरना,आंधी तूफान से आम का गिरना।
झड़ – वर्षा।
झड़ी – बारिश।

झलकय – छलकना।
झट – ठोकर।
झट – जल्दी से।
झबरा – रोएदार।
झकाट – सफेद झक।
झटपट (अ) – जल्दी ।
झड़ना (अ) – गिरना।
झन्नाना – फेंकना।
झाक – ढांक।
झाक उघाड़ – ढांकना खोलना।
झाक उघाड़ – आसमान में बादल का आना – जाना।
झापड़ – जोरदार तमाचा।
झासी – सुरक्षित गाड़ी।
झाडू – बुहारी।
झाड़ – पेड़,वृक्ष।
झाड़ – बुहार,फड़ा लगाना।
झाड़ – झाड़ फूॅक,जंतरमंतर।
झाड़ा – टट्टी।
झाड़झंखाड़ – झाड़,पेड़।
झापी – बास की ढक्कनदार टोकरी।
झांझ – तश्तरीनुमा वाद्य।
झाट – लिंग के बाल।
झिज गया – थककर चूर हो गया।
झिजना – चलकर घिस जाना।
झिरी – झिरिया।
झिरी – पतला व कमजोर गेहूॅं।
झिझक (अ) – हिचक।
झिल्पा – लकड़ी के छोटे टुकड़े।

झुक – नीचे होना।
झुक – घड़। फलों का गुच्छा।
झुर्री – बुढ़ापे की निशानी।
झूमना – चिपकना,पीछे लगना।
झूमाझटकी – झगड़ा झांसा।
झूल – बैल पर डालने वाला कवर।
झेका – टेका।
झेलना – सहन करना।
झेलना – बारात झेलना।
झेलना – फेंकी/झूलती चीज को पकड़ना।
झोड़ – मधुमक्खी का शहद निकालना।
झोड़ – आम गिराना,पेड़ से फल गिराना।
झोड़पा – पतली लकड़ी।
झोड़पना – मारना।
झोपा – खलिहान का फाटक।
झोक – संतुलन।
झोक नी संभलत – कमजोरी से अपना शरीर न संभलना।
झोंक – उठाकर डाल,आग में डाल।
झोंक दे – पूरी ताकत लगा देना।
झोका – झुलाना।
झोल – ढील।
झोला – बस्ता।
झोटा – बाल।
झोपड़ी – कुटी।
झोलंग्या – ढीलाढाला।
झौल्या – झूलने वाला,ढीला।
झौल्या लेड़ – कमजोर पौरूष,एक प्रकार की गाली।

ट

टकटकी – लगातार देखना।
टकली – सिर मुंडा।
टशल (अं) – विवाद।
टपोर – बड़ी।
टणको – स्वस्थ।
टट्टा – गाड़ी के बगल में लगाया जाने वाला कवर।
टट्टी – गाड़ी के पीछे का कवर।
टट्टी – शौच।
टपका – पानी टपकना।
टपकना – गिरना।
टरटराना – मेंढक की आवाज।
टंगड़ा – पैर।
टंगड़ी – टांग।
टर्राना – मेंढक की आवाज।
टर्री – टर टर करने वाला।
टंटा – मुसीबत।
टमाटर – भेदरा।
टंटा – काम,टंटा च तोड़ दिउ।
टंटी – मुसीबत झेलने वाला।
टर्राय – मेंढक की आवाज।
टाटरा – कड़ा,मोटा भूसा।
टालमटोल – सच्चे मन से काम न करना।
टालमटोल – इसका उसका बहाना करना।
टाली – गाय।
टांग – पैर।
टांग अड़ाना – दिक्कतें खड़ी करना।
टांगना – कंधे आदि पर लटकाना।

टापरी – खलिहान की मिट्टी को टिपना।
टापरी – टापरी जोड़ना,बैलों को खलिहान में गोल गोल घुमाना।
टिकली – बिन्दी।
टिकली – दीपावली पर फोड़ने वाली टिकली।
टिटकारना – टिट टिट करना।
टिटकारी – तितर की आवाज।
टिटोरी – टिटहरी।
टिटवी – कुए की मिट्टी निकालने के लिए बैल हॉकना।
टिब्बा – ऊँचा स्थान।
टिप्पा – उछाल।
टीपना – मिट्टी आदि को धुम्मस से टीपना।
टीका – तिलक।
टीकाना – जुम्मे लगाना।
टीकाना – किसी के सहारे खड़ा करना।
टुरटुर – मोपेड आदि की आवाज।
टुरटुरी – मोपेड आदि गाड़ी।
टुर्हाटी – अरहर के डंढल।
टुकड़या – टुकड़े पर पलने वाला।
टुकड़ा – हिस्सा,खेत।
टुकड़ा – रोटी का कोर,टुकड़ा।
टुकड़ाहा – टुकड़ों पर पलने वाला।
टेकड़ा – पहाड़।
टेकड़ी – छोटा पहाड़।
टेम – टाइम,समय।
टेमा – मशाल।
टेर – रट।
टेटवा – गला।
टेम्रून – तेंदू फल।

टेनपा – लकड़ी का टुकड़ा।
टेक – आधार,झेका।
टोपला – टोकरा।
टोपली – टोकरी।
टोरी – महू का बीज
टोटका – जादू टोना।
टोटरो – खट्टा – मीठा।
टोटा – हानि।
टोह्यली – छोटा आम।

ठ

ठस – बुद्धू।
ठसक – मिर्ची आदि के जलने पर छींक आना।
ठसका – सूखी खांसी,खाते समय गले में अटकने पर खांसना।
ठरकना – थोड़ा सूखना।
ठनकना – दॉत का हल्का दर्द।
ठर्रा – देशी शराब।
ठसाठस – खूब भरी हुई।
ठंडकाला – सर्दी का मौसम।
ठंडो – ठंडा।
ठंडोजहेर – अत्यधिक ठंडा।
ठाटी – थाली।
ठाट – शान।
ठाटबाट – शानोशौकत।
ठान – प्रतिज्ञा।

ठिकाना – स्थान।
ठिकाना लगाना – जहॉ का तहॉ पहुॅचाना।
ठिठोली – हॅसीमजाक।
ठीया – स्थान।
ठीकरा – दोषारोपण।
ठीकरा फोड़नूं – दोष मढ़ना।
ठीकठाक – अच्छा,स्वस्थ।
ठुसमुस – स्वस्थ।
ठेमला – गेंहूॅ की बंधी गांठ।
ठुमका – कमर मटकाना।
ठूठा – टुटे हाथ वाला।
ठुमुकठुमुक – बच्चों की आकर्षक चाल।
ठेमा – ठेमला।
ठेंगा – अगूंठा।
ठोमा – आंजूर,अंजुरी।
ठोकना – बजाना।
ठोक बजाकर लेना – देखपरख कर लेना।
ठौल ठिकाना – अतापता।

ड

डगर – बाट,राह,रास्ता।
डगर नी जानूॅ – छेड़ना नहीं।
डगाल – डाल,शाखा।
डगेली – दागदार।
डंगेला – बोनी के पूर्व बखरना ।
डखरना – बैल की आवाज।
डट ख – पेट भर,जी भर।
डटडटा ख् – पेट भरके।
डटा – घुसा।

डटानूं – घुसाना।
डरय – डर रहा।
डकार – पेट भरने का संकेत।
डगर – बाट,राह,रास्ता।
डगर नी जानॅू – छेड़ना नहीं।
डटय – चुस्त होना।
डंक – दंश।
डंडा – लकड़ी।
डंका – नगाड़ा।
डंके की चोट पर – खुलेयाम।
डंक मारना – बिच्छू आदि का डंक मारना।
डांड्या – लुगड़े,धोती को बीच में से फाड़कर पुनः जोड़ना।
डांड – पानी की नाली।
डाग – दाग।
डाट – फटकार।
डाट – घना।
डाबडुबेली – पेड़ पर खेला जाने वाला खेल।
डाकिन – बुरी आत्मा।
डाल – डालना,उलेड़ना।
डागिन – डाल,शाखा।
डास – खून चूसने वाला मच्छर प्रजाति का कीट।
डांडी – खोर की डांडी,रस्सी।
डिंडी – भजन समारोह।
डिब्बी – डिबिया।
डीग – गोंद।
डीठ – बुरी नजर।
डुकय – चुपचाप देखना।
डुक्कर – सुअर।

डुगडुगी – एक प्रकार का बाजा।
डुंगी – नीचला काला खेत।
डुब्यो – डूबा।
डुव्हारय – ढोना,लाना।
डूंड – खोड़।
डूंडा – मुड़े सिंग वाला।
डूठी – पेट की समस्या,डूठी खिसकना।
डेकची – खाना बनाने का बर्तन।
डेहर – दरवाजा।
डेहर नी डुकू – दरवाजे पर पैर न रखूं।
डेंडकाया – असामान्य,निःशक्त।
डेंडू – केचुआ।
डेठुल – डंठल।
डोहन – कुए की लकड़ी की नली।
डोहो – तलाब।
डोचलय – छेड़ना,हिलाना।
डोकरा – बूढ़ा।
डोकरी – बूढ़ी।
डोरा – ऑखें।
डोरा दिखानॅू – ऑखे दिखाना,इशारा करना।
डोल – खेत।
डोलय – अनावश्यक फिरना।
डोल – प्रतिमा विसर्जन के लिए लकड़ी का डोल।
डोडा – बड़े आकार का कपास,सेमल का फल।
डोडी – कच्चा व छोटा फल।
डोभन – पानी भरा गड्ढा।
डोभरी – पानी वाला खेत।
डौरा – खरपतवार हटाने हेतु चलाया जाने वाला यंत्र।
डौंड – डौंड पिटवाना,मुनादी करना।

डौंडी – मुनादी।

ढ

ढल ढल – पतले दस्त।
ढलढली – पतले दस्त।
ढलनी – पोकनी।
ढर्रा – पुरातनपंथी।
ढंडार – गम्मत।
ढांडा – ज्वार व मक्के के डंठल।
ढिंढोरा – मुनादी।
ढिल्लो – ढीला।
ढिल्लोढस – ढीलाढाला।
ढीम्मर – ढीमर,मछुआरा।
ढुल्ला – बड़ा टोकरा।
ढुल्ली – बड़ी टोकरी।
ढुलमुल – कामचलाऊ।
ढेमन्या – गंदी नाक वाला।
ढेकना – खटमल।
ढेपल्या – मिट्टी का ढेला।
ढेर – बहुत।
ढेरा – सन अम्बाड़ी आटने का धन आकार का यंत्र।
ढेला – गुड़,मिट्टी आदि का टुकड़ा।
ढोप्टी – नाई का सामान रखने का बस्ता।
ढोबरा – टीन का टुकड़ा।
ढोबार्‍या – एक गोत्र,माल ढोने वाले।
ढोर – जानवर।
ढोर जानवर – जीवजन्तु।
ढोर जानवर समझय का – तुच्छ समझना।
ढोर डंगर – ढोर जानवर।

ढोडूर – सूखे तने में बना छेद।
ढोना – जानवर के गले में बंधा टीन का घंटा।
ढोमना – मिट्टी की तश्तरी।
ढोमना – बड़ा की मानय नी सीख,ले ढोमना मांगे भीख।
ढोमनी – मिट्टी की तश्तरी।
ढोंडा – चार साल में आने वाला एक माह। अधिमास।
ढोल – डाल,फैला।
ढोल – नगाड़ा।
ढोल म पोल – बड़े में भी दोष।
ढोल ठोकना – उजागर करना।
ढोलेवार – एक जाति।

त

तर गयो – जिंदगी सफल होना।
तखत (फा) – सिंहासन,ऊंची चौकी।
तबेला – हांडी,मिट्टी का बर्तन।
तज़रबा (अ) – अनुभव।
तरबतर – नीचे से ऊपर तक भीगा हुआ।
तगाड़ी – तसला।
तराजू – तागड़ी।
तबाही (फा) – बर्बादी।
तढ़ू – बिछायत।
तबादला – बदली,स्थानांतरण।
तबीयत (अ) – स्वास्थ्य।
तकाबी (अ) – राजस्व कर।
तरथी – हथेली।
तरिया – चप्पल।
तमगा (तु) – पदक।

तमन्ना (अ) – आरजू।
तलाब – तालाब।
तमाम (अ) – सब।
तहकीकात (अ) – प्रारंभिक जॉच।
तमाशा (अ) – खेल।
तप्यो – गसम।
तनफन – बात बात पर नाराज ।
तनफन होना – बात बात पर नाराज होना।
तपना – गरम होना।
तरकश (फा) – तीर रखने की खोल।
तंग – आखुड़ , संकीर्ण।
तंग – परशान। तंग आना,परेशान होना।
तंगी (फा) – परेशानी।
तरकीब (अ) – उपाय।
तरक्की (अ) – उन्नति।
तंबोली – पान बेचने वाला।
तरफ (अ) – ओर,कोदी।
तकदीर (अ) – किस्मत।
तरीका (अ) – ढंग।
तकरार (अ) – झगड़ा,विवाद।
तलब (अ) – आदि होना।
तकरीबन (अ) – लगभग।
तलाक (अ) – छोड़चिट्ठी।
तकलीफ (अ) – कष्ट।
तलाश (तु) – खोज।
तड़ाल – सरासर।
तश्तरी – (फा) – प्लेट।
तस्वीर (अ) – फोटो।

तह – (फा) – परत।
तहलका (अ) – खलबली।
ताक – कही।
ताक – फिराक,घात।
ताकत (अ) – जोर।
तान – तानना,खींचना।
तान – सुर,धुन।
तागड़ी – तराजू।
ताकि (फा)इसलिए कि।
तासीर – प्रकृति,स्वभाव।
तारीख (अ) – तिथि।
ताल – तालाब।
ताल – हालात।
तालखी – छोटी कथड़ी।
तालमेल – सामंजस्य।
ताला – ताला,लॉक।
तारीफ (अ) – प्रशंसा।
ताव – जोश,रोष।
तिफन – तीन फन वाली।
तिरय – तैरना।
तितुर – तीतर।
तिरपट – तिरछा देखने वाला।
तिरपाल – टेंट।
तिराहित – पराया।
तिकड़म – युक्ति,जुगाड़।
तिकड़मी – जुगाड़ू।
तिलगा – अंगारा।
तिलगंय – बेजान वस्तु का तैरना।

तीन दो पॉच करना – बहस करना।
तीन तेरा, नौ अठारा – दुगुना करना,भाग जाना।
तीन ताल – बेहाल।
तीस – प्यास।
तीड़ – दरार।
तीन ताल,चौदा भुवान – अत्यधिक परिश्रम।
तुर तुर चलय – शीघ्रता से चलना।
तुमड़ा – गोल लौकी।
तुमड़ी – लम्बी लौकी।
तुहमत (फा) झूठी बदनामी।
तूफान (अ) आंधी,बवंडर।
तेरी चिपड़ी चपाचप,मेरा डेंडू लपालप – मिया बीबी राजी तो क्या करेगा काजी।
तेल निकाल दियो – पसीना – पसीना करना।
तो ख् – तुम्हें।
तोर – अरहर।
तोरा – तुम्हारा।
तोरो आय का – तुम्हारा है क्या।
तोरण – पत्ते की माला।
तोबर्या – फूले व मोटे गाल।
तोह्यमत – बदनामी।
तौहीन (अ) अनादर।
तौबा – दूर सी नी भली।

थ

थन – दूदू।
थपेड़ा – हवा,पानी का जोर का झटका।
थप्पी – अनाज का ढेर।
थपथपाना – हल्के – हल्के मारना,शाबाशी देना।

थान – कपड़े का थान।
थाना – पुलिस स्टेशन, आरक्षीगृह।
थाप – हथेली की मार,कंडे थापना।
थापना – स्थापना,चबूतरा।
थावा – खटिया के पैर।
थापड़ – थप्पड़,चपत।
थाड़ो – खड़ा।
थाली – लोटा।
थिरकना – पैर का हिलना डुलना।
थुलथुला – बेडौल।
थूथड़ – मुॅह।
थूथड़ा – मुॅह।
थूक – थूक।
थेम – बूॅद।
थेमथेम – बूॅदबूॅद।
थेगड़ा – फटे कपड़े को कपड़ा लगाना,दुरूस्त करना।
थैला – झोला,बस्ता।
थैली – झोली।
थोबड़ा – सूरत,शक्ल।
थोक – बड़ा,होल सेल।
थोड़ी – कम।

द

दइत – दैत्य।
दगड़ा – चीनी मिट्टी का बड़ा कटोरा।
दगड़ी – चीनी मिट्टी की छोटी कटोरी।
दरना – पिसाई का अनाज।
दरना – पिसाई क्रिया।
दंग (फा) – चकित।

दंगल (फा) – मुठभेड़।
दखल (अ) – रोड़े अटकाना।
दगा (फा) – धोखा।
दगा – सर्पदंश।
दफन (फा) – गड़ाना।
दंगस – घास – फूस।
दढ़ो – मोटा।
दवड़ी – रोटी की टोकरी।
दफ्तर (अ) – कार्यालय।
दर – दर (अ) – द्वार – द्वार।
दरी – बिछायत।
दराज (फा) – लंबा,विशाल।
दवात – शीशी।
दराती – हसिया।
दर्जा (अ) – स्तर।
दर्जी (फा) – टेलर।
दलिद्दर – गंदा,गरीब।
दलदल (फा) – कीचड़।
दबड़ा – कबूतर के रहने का स्थान।
दस्त (फा) – हाथ,पतला पाखाना।
दस्ती – रूमाल।
दस्तक (फा) – ठोक,खटखटाना।
दस्तखत – हस्ताक्षर।
दहलीज (फा) – देहरी।
दहशत (फा) – डर,भय।
दवादारू – दवाई।
द्यारी – दिवाली।
दंदरना – घबराना।

दंदर मंदर,घर म् गोंदर – घबराकर घर में चिल्लाना।
दंद – झगड़ा,द्वंद्व।
दमदार – हिम्मतवर।
दम – हिम्मत।
दम – कश,हुक्का आदि का।
दइचाना – गाड़ी आदि गिरकर लगना।
दचका – पथरीले रास्ते पर गाड़ी में लगने वाला धक्का।
दचड़ना – उठाकर पटकना।
दरदरो – न बारीक न मोटा,रवेदार।
दबदबा – धाक।
दरोगा (फा) – थानेदार।
दायजा – दहेज।
दारू – शराब।
दादू – देवर।
दाग (फा) – धब्बा।
दार – दाल।
दाद (फा) – इंसाफ,न्याय।
दाद – वाह वाह।
दाद – एक प्रकार का रोग।
दान – दान पुण्य।
दान – डोल,बारी।
दान देना – खेल में हार जाने पर दान देना।
दान – क्रम।
दाना (फा) – बुद्धिमान।
दाना इंसान – बुद्धिमान व्यक्ति।
दाना – अनाज का दाना।
दानापानी – अन्नजल।
दावन – फसल से अन्न निकालना,

दावन – खलिहान में फसल को बैलों द्वारा रौंदना।
दांगड़ा – लम्बे डग वाली।
दावा (अ) – अधिकार,हक।
दास्तान (फा) – वृतांत,कहानी।
दातरा – हसिया।
दाखला – दिखाई देना।
दाभन – सूजा।
दारी – महिला की एक प्रकार की गाली।
दिमाग (अ) – मस्तिष्क।
दिल (फा) – हृदय।
दिली (फा) – हार्दिक।
दिलेरी (फा) – हिम्मत।
दिवलानी – मिट्टी का दीया।
दीदार (फा) – दर्शन,चेहरा।
दीवार (फा) – भीत,दीवाल।
दुकान (फा) – शॉप।
दुदू – स्तन।
दुनिया (फा) – विश्व।
दुचना – ठूॅसना।
दुम (फा) – पूॅछ।
दुजबर – दूसरा वर।
दुरूस्त (फा) – स्वस्थ,सही।
दुल्हा – वर।
दुल्हन – वधू।
दूर (अ) – नजदीक का उल्टा।
दूद – दूध।
दे – देना।
देखनो – देखना।

देख्या – देख लिए।
देनदारी – देने की,उधारी।
देव – देवता।
देव म लेनॅू – मरने पर डाबली में शामिल करना।
देवकल – खुला छोड़ना।
देवकल छोड़ना – बकरे,सांड आदि को देव के नाम पर छोड़ना।
देवड़ी – पार,मिट्टी की बनी ऊँची बैठने की जगह।
देठ – डंठल।
दैत्य – दानव।
दोर – रस्सा।
दोरी – रस्सी।
दोरा – धागा।
दोगल्या – धोखेबाज।
दोस्त (फा) – मित्र,सखा।
दोस्ती (फा) – मित्रता।
दोभड़ी – दूब।
दोभड़ा – घास,फसल आदि के कटे नोंकदार ठॅूठ।
दोगला – इधर की उधर लगाने वाला।
दोड़क्या – तुरई।
दोह्यनी – मिट्टी की हांडी,मटकी।
दौलत (अ) – सम्पत्ति।
दौड़ी – रोटी की टोकरी।
दौर – वक्त,समय।
दौरा – भ्रमण।

ध

धग्गड़ – एक प्रकार की गाली।
धंधा – काम।

धड़ – सिर के नीचे का हिस्सा।
धड़ से सिर अलग करना – मार डालना।
धड़कन – हृदय गति।
धड़ाका – डर,भय।
धरती – भूमि,पृथ्वी।
धर – पकड़।
धनी – पति,घर का मुखिया।
धनी – धनवान।
धनी – घर मालिक।
धरना – अनशन।
धरना देय का – अनशन पर बैठना।
धरना – पकड़ना।
धड़ी – पार,मिट्टी की बनी ऊँची बैठक।
ध्वार – कोहरा।
ध्वारा धोसा – लिपाईपुताई व सफाई।
धाक – डर,भय।
धापिल – मार की डर से घबराया।
धार – प्रवाह,वेग।
धारा – प्रवाह,वेग।
धाव – एट मोट द्वारा पानी निकालने हेतु बैलों के चलने का निर्धारित स्थान।
धिंगाना – उधम,मस्ती।
धींगामस्ती – उधमबाजी।
धुर – बैलों के कंधे पर ज्वाड़ा रखना।
धुर जुपना – बैलों के कंधे पर ज्वाड़ा रखना।
धुर – बुद्धिहीन,बेवकूफ।
धुम्मस – टिपने का यंत्र।
धुंध – आंधी,तूफान।

धुंधलो – धुंधला,साफ नहीं।
धुंधू – एक नाम,धुंध की तरह चलने वाला।
धुपार – दोपहर।
धुड़ला – धूल।
धुल्या – धुले हुए।
धुर – बैलों के कंधों पर रखा ज्वाड़ा।
धुर – बेवकूफ।
धुनना – रूई आदि को धुनने का कार्य।
धूमधड़ाका – भीड़भाड़।
धुरा – खेत की मेड़,बंधान।
धूरा – मेड़,बंधान।
धूम – भीड़।
धून – जुनून।
धून – मार,पिट।
धूनना – मार पिटाई करना।
धूरा – ज्वाड़ा।
धूराबंधारा – मेड़,बंधान।
धेड़ – बदमाश,एक तरह की गाली।
धेड़ – नीची जाति का।
धेड़चमार – नीची जाति का,वर्णशंकर।
धेला – सबसे छोटा पैसा।
धेला नी नंदत – पास में फूटी कौड़ी न होना।
धोना – धोने के कपड़े।
धोनापानी – कपड़े धोना व पानी भरना।
धोनी को पानी – धूले जूठे बर्तनों का पानी।
धोती (सं) – पुरूषों का शुभ्र,धवल अंग वस्त्र।
धोती – कपड़े धोने का कार्य।
धोबी – कपड़े धोने वाला,एक जाति।

धोबीन – धोबी की पत्नी।
धोबीघाट – कपड़े धोने का नदी,कुए का स्थान।
धोबीपछाड़ – मल्लयुद्ध का एक दाव।
धौलो – न सफेद न भूरा।

न

नक – नाखून।
नकना – उस पार जाना।
नकाना – उस पार करना।
नकली (अ) – जाली,झूठा।
नकद (अ) – तुरंत।
नक्टा – बेशरम।
नकीतर – नक्षत्र।
नंगत – अच्छा।
नंगा – बेशर्म।
नंगधड़ंग – बिना कपड़े का।
नरम – कवरा।
नरवा – नाला।
नर – पुरूष।
नरमादा – मेल फिमेल का जोड़ा।
नरा – नाल।
नरा गड़ना – जन्म होना।
नरा – दवाई पिलाने की बॉस की नली।
नखर्‌या – नाज – नखरे।
नखरा (फा) – दिखावटी इंकार।
नजदीक (फा) – समीप,पास।
नजर (फा) – दृष्टि।
नजर लगना – बुरी दृष्टि पड़ना।
नजाकत (फा) – सुकुमारता।

नतीजा (फा) – परिणाम।
नवतो – नया।
नवत नी – झुकता नहीं।
नवस – कामनापूर्ति पर बली चढ़ाना।
नड़ला – गले का अंदरूनी भाग।
नक्टो – बेशरम।
नक्टी – टूटीफूटी।
नथ – नथनी,नाक में पहनने का आभूषण।
नहानी – स्नानघर,आंगधोना।
नफा (फा) लाभ।
नफानुकसान – लाभहानि।
नसीब (अ) – किस्मत,भाग्य।
नस्ल (अ) – जाति।
नम्यो – झुका हुआ।
नर्राय – जोर से चिल्लाना।
नरवट्‌टू – नारियल की खोल।
नंद – पति की बहन।
नंदोई – नंद का पति।
नंद मिट्‌टी की भी बुरी – खतरनाक।
नंदना – निभना।
नंदाना – निभाना।
नंगपाचय – नागपंचमी।
नटय – छल करके छीनना।
नटेर – ऑखें फाड़ना।
नद्‌दी – नदी।
नद्‌दी नरवा – नदी नाला।
नतनी – सूंड की रस्सी।
नजीक – पास।

नस – नाड़ी।
नस – तम्बाकू।
न्यौता – निमंत्रण।
नाक होनूं – शर्म होना।
नाक नी होनूं – बेशर्म होना।
नाक रखजो – इज्जत रखना।
नांगोरी – पत्थर ऊपर पत्थर जमाना।
नानपण – बचपन।
नानो सो – छोटा सा।
नानो तानो – शिशु।
नाम नाम्ना – प्रसिद्धि,ख्याति।
नांद – बड़ी कोठी।
नारेल – नारियल।
नाती नतरा – नाती पोते।
नांगदेव – नागदेवता।
नागदेव – नागपूजा, जिसमें नाग को खेत के रखवाले के रूप में पूजते है।
नाड़ा – मोटा धागा।
नाड़ा टोचनूं – एक रिवाज,जिसमें कमर की दोनों ओर चमड़ी में सुई से धागा पिरोया जाता है।
नारबोद – दवाई वृक्ष।
नाथ – नकेल।
नाथ – प्रभु,ईश्वर।
नाता – रिश्ता।
नारा देना – जोर से चिल्लाना।
नाह्नो – छोटा।
नाह्नी – छोटी।
निंघा – नजर।

निपकानो – निकालना।
निंदाई – फसल की गुड़ाई।
निरपना – निचोड़ना।
निसानी – सीढ़ी।
निगाह (फा) – दया दृष्टि,ध्यान।
निशान – चिह्न,हिंद्यान।
निदान – समाधान।
निंदाई – खरपतवार की सफाई का काम।
निरप – खबर।
निम्मत – निमित्त।
निसय – छिलना।
निसाय – अपने आप भुट्टे का ऊपर आना।
निड़ला – खाली।
निरा नाम – बिल्कुल भी।
निचनताई – फुर्सत।
नीरो – बिल्कुल।
नीच्च – नीचे।
नीवज – नेवैद्य।
नुक्ता (अ) – खोट,दाग,धब्बा।
नुक्ताचीनी – खोट निकालना।
नुसखा (अ) – प्रयोगविधि।
नेम करनूं – नाम करना।
नेंग – विधिविधान।
नेंगमोरा – रीतिनीति।
नेमना – नाक की सूखी पपड़ी।
नोन – नमक।
नोन तेल – नमक तेल।
नोट – कागजी रूपया।

नोनी – मक्खन।
नौनिहाल – छोटे बच्चे।

प

पक्को – पक्का,मजबूत।
पकवान – व्यंजन।
पकना – फल पकने की क्रिया।
पका – पका फल,पूर्ण।
पंजरी – धनिए के मिश्रण से बनी पीठी।
परदेश – दूसरा देश।
परची – सिलगी,आग जलना।
पचड़ा – झमेला।
पलेवा – बोनी के पूर्व खेत की सिंचाई।
पलार – धान के बीज निकले सूखे पौधे।
पहेट – भुमसार,भोर।
पंसारी – किराना व्यापारी।
परहेज (फा) – बचना।
पस्त (फा) – हारा हुआ।
पस्या – पसीना।
पंगत – ज्योनार।
पड़छय – आरती उतारना।
पडष्पड़ाना – पपड़ी निकलना।
परधान – प्रधान,मुखिया।
पत – लाज।
पसाना – भात का मांड निकालना।
पसारा – सामान का फैलना।
पड़्या – पड़े हुए।
पनोची – पानी रखने का ऊँचा स्थान।
परचना – सिलगना,आग जलना।

परचाना – सिलगाना,आग जलाना।
पतली – तरल।
परवर्‌यो – बारीक अनाज सावा,कुटकी आदि को धोते समय कंकड़ निकालना।
पस – मवाद।
पदर – छेव,पल्ला।
पड़दा – पर्दा।
पड़दी – गाड़ी पर डालने वाली पर्दी।
परसाद – प्रसाद।
पह्यलोट – पहली बार।
परसना – भोजन परोसना।
परतबाही – मोट हेतु लकड़ी का आधार खम्ब।
परोता – परतवाही पर लगा लम्बा व गोल चका।
परसा – पलाश।
पट – शीघ्र,बैलों की दौड़।
पछाड़ना – मार गिराना।
पराड़ी – ढालू जमीन।
परहाटी – कपास के डंठल।
पतेली – तपेली।
पट्‌टी – स्लेट,सिखाना।
पचपावली – महाशिवरात्रि।
परेरना – सावा,कुटकी आदि को पकाने के पूर्व पानी से साफ करना।
पटोड़ी – भाप में पके बेसन का व्यंजन।
पायते – पैर तरफ।
पाटा – पहिये के ऊपर चढ़ी रिंग।
पातर – पतराली।
पारना – पालना,झूला,जन्माष्टमी।

पाई – अनाज नापने का एक सेर के बराबर का माप।
पाउडर (अं) – महीन चूरा।
पास – बक्खर की लोहे की चपटी पास।
पॉकेट (अं) – खीसा,जेब।
पार – मिट्टी की बनी ऊँची बैठक।
पारधी – एक आखेटक जाति।
पादना – गंदी हवा निकलना।
पानफूल – तुच्छ भेंट।
पाव्हना – मेहमान।
पालथी – आसन।
पानी पाउस (म) – बादल पानी।
पाट – बाद का,पीछे,दूसरा विवाह।
पांटा – मक्के के छिलके।
पाउल – पैर का नीचला हिस्सा।
पाचर – पतली पट्टी।
पायतन – जूते।
पायरा – पदार्पण।
पान – पत्ता।
पानुड़ – गन्ने के सूखे पत्ते।
पाल मांडना – बैठे रहना।
पायरी – सीढ़ी।
पाटोड्या – बड़ा मटका।
पानवेल – भाप मे बनाई रोटी।
पालवी – पत्तेदार शाखाएं।
पा छ् – पीछे।
पाय – पैर।
पाजय – दूध पिलाना।
पाटली – गाड़ी की पतली पट्टी।

पांढरी (म) – भूरी।
पाट्या – आठ – दस पंक्ति का भाग।
पिर्यो – निचोड़ना।
पिरगड़ना – मरोड़कर पानी निकालना।
पित्तर – पितृ पक्ष।
पिचकना – दबाना।
पिनकना (फा) – नशे मे आना,आवेश में आना।
पिटकोली – पीठ पर बिठाना।
पिट्टू – खुशामदी,खेल का साथी।
पिठोरा – पोले के पूर्व बहन को भेजे जाने वाले नारियल,मूँगफली आदि।
पिद्दी – छोटा।
पिस्टा – ज्वार के दाने निकले भुट्टे।
पिवसी – बटुआ जिसे कमर में खोंचा जा सके।
पिराना – बैल हॉकने की लम्बी लकड़ी।
पिल्ला – छोटा बच्चा।
पीट – मक्के के आटे व मही का बना व्यंजन।
पीप – मवाद।
पीठी – आटे गुड़ का मिश्रण।
पुस्टी – पूंछ।
पुख्ता (फा) – पक्का,मजबूत।
पुरा – मोहल्ला।
पुश्तैनी (फा) – पीढ़ियों से चला आया।
पूर – बाढ़।
पूरय – पूरा पड़ना।
पूरी – परम पूरी,मीठी रोटी।
पूरना – भरना,चौक पूरना।
पूरन – पीसी मीठी दाल।

पेरय – गन्ने का रस निकालना।
पेज – पतली दलिया।
पेट सी होना – गर्भवती होना।
पेटी – संदूक,बाक्स।
पेटीकोट (अं) – साया।
पेशा (फा) – व्यवसाय।
पेशी (फा) – मुकदमे की सुनवाई।
पेशाब (फा) – मूत्र।
पेंदी – तल।
पेसेंजर (अं) – सवारी गाड़ी।
पेरी – पीली।
पेरी – गन्ने के छोटे टुकड़े।
पेरो – पीला।
पैभारी – सीधे,बिना रूके।
पैलोड़ी – पहेली।
पैदा (फा) – जन्म,उत्पन्न।
पैदाइश (फा) – जन्म से।
पैना – धारदार।
पैना – मिट्टी का बर्तन जिसमें भात को भाप देकर पकाया जाता है।
पैबंद (फा) – चकती,थेगड़ा।
पोयटा – गोबर।
पोर्‌या पोरी – लड़का लड़की।
पोचा – बिना भरे।
पोची – दाने विहीन।
पोपड़ा – बड़ी पपड़ी।
पोपड़ी – छोटी पपड़ी।
पोपट्‌या – एक सब्जी।

प्यादा (फा) – पैदल सिपाही।
प्याला (फा) – पीने का बर्तन।
पोला – बैलों का त्योहार।
पोहा – तीर्थयात्री।
पोवाड़े – अतिशयोक्तिपूर्ण गीत।
पोरा – बैलों का त्योहार।
पोकय – पतले दस्त करना।
पोकनी – पतले दस्त।
पोथी – एक प्रकार की भाजी।
पोथी – ग्रंथ।
पोंगरी – फूॅकनी,पोंगली।
पोमड़ा – तेल सना कपड़ा।
पोट्‌टा पोट्‌टी – लड़का लड़की।
पोतारा – पोतने का कपड़ा।
पोटली – गठरी।

फ

फकत – केवल,अकेला।
फकीर (अ) – भिखारी।
फक्कड़ – मस्तमौला।
फजीता – अनावश्यक परेशानी।
फजीहत – बेमतलब की परेशानी।
फलॉ – फलॉ – नाम के स्थान पर उपयोग में।
फरकय – ऑख का फड़कना।
फफोला – जलने पर उठा छाला।
फंदा – फॉसा।
फड़तूस – फालतू,बेकार।
फड़ा – झाड़ू।
फबना – अच्छा दिखना।

फट – शीघ्र,जल्दी।
फल – आम अमरूद आदि फल।
फलना – फल का लगना,लाभकारी होना।
फल्ली – मूँगफली।
फल्लीदाना – मूँगफली दाना।
फसाद (अ) – लड़ाई ,झगड़ा।
फसल (अ) – पैदावार।
फर्याउर – फलाहार।
फन – नाग का फन।
फनी – महिलाओं के बाल संवारने की कंघी।
फरको – बारिश का रूकना,खुलना।
फंडकूल – एक पक्षी।
फर – भिलवे का बींज
फरना – पशुओं का गर्भाधान।
फरतोड़ा – अंकर फूटना।
फटफटी – मोटर साइकिल।
फट्या – फटे हुए।
फटकार – डॉट।
फराक (अं) – फ्राक।
फटकी – फटी हुई,छोटा फाटक।
फड़की – दुपट्टा, शाल, ओढ़नी।
फक्का – फॉकना, सूखा खाना।
फलदान – अंगूठी की रस्म।
फड़ – ढेर, दुकान, गाड़ी का फड़।
फटकना – पास में आना।
फटकना – सूपे से साफ करना।
फनफनाना – गुस्से में होना।
फंटा – ज्वार, मक्के के कटे धारदार तने।

फायदा (अ) – लाभ।
फाट्या – पंक्ति के बीच का अधिक अंतर।
फॉस – बास की पतली फॉस।
फाटा – लकड़ी की शाखाएं।
फाटा – सड़क से कई सड़क निकलना।
फाड़ – चीर।
फाड़ी – पत्थर के टुकड़े।
फार – ज्यादा होना,फूलना।
फाड़ा – निर्मित संख्या नग।
फालतू – बेकार।
फॉसा – फंदा।
फारका – फ्राक।
फिराक में – अवसर की ताक में।
फितरत (अ) – चालाकी,स्वभाव।
फिदा (अ) – मुग्ध,आसक्त।
फिरय – घूमना।
फिरकी – हवा से चलने वाली कागज की पंखी।
फिरस्ता – घूमने फिरने वाला।
फिफोली – तितली।
फुटाना – भूने चने।
फुट – भगले,चला जा।
फुरेला – नागपंचमी को व्यंजन सीके पर रख पूजना।
फुन्दा – गुच्छा।
फुसांदी – गंदी,मैली कुचैली।
फुकट – मुफ्त।
फुलवा – एक प्रकार का नाम।
फूल (अ) – पुष्प।
फूलवारी – उद्यान।

फूलझड़ी – आतिशबाजी।
फेड़ना – चुकाना।
फेर – बारी।
फेटा – सालू बॉधना।
फेरा – चक्कर।
फेरी – आना जाना,घुमकर बेचना।
फैसला (अ) – निर्णय।
फोंडका – मक्के का व्यंजन।
फोतला – छिलका।
फोड़ – टुकड़े।
फोड़ – फोड़ने का आदेश।
फोड़ा – फोड़ाफुंसी।
फौज (अ) – सेना।
फौजी – सैनिक।

ब

बइल – बैल।
बकरा – बकरा।
बकरा ख बनायच लिंहू – एक प्रकार की गाली।
बकरी – बकरी।
बकरी जसो चरनूँ – हमेशा खाते ही रहना।
बक्कल – पलाश की जड़ के रेशे।
बक्खर – एक प्रकार का हल।
बखारी – अनाज रखने की बॉस की कोठी।
बखरना – बक्खर से खेत बनाना।
बक्खा – कंधा।
बगार – भैस की बछिया।
बंगडी – चूड़ी।
बगल (फा) – कॉख,पहलू।

बगरय – फैलना।
बगराजो मत – फैलाना मत।
बगाना – निभाना।
बगाजो – निभाना।
बगोला – पागुर करना।
बख्शिश (फा) – दान,दक्षिणा,इनाम।
बखत – समय,वेला।
बखेड़ा – झंझट,झगड़ा।
बघार – छोंक।
बगावत (फा) – राजद्रोह।
बच – एक दवाई।
बंध – बांधने हेतु आटा।
बधत नी – वश में न होना।
बपौती – बाप दादा की सम्पत्ति।
बफोड़ी – बेसन का सालन।
बटाई – आधी उपज पर खेत देना।
बनी – मजदूरी।
बनिहार – मजदूर।
बटना – मटर।
बटन (अं) – गुदाम।
बठ – बैठना।
बिठावय – विराजमान करना।
बठ्या – बैठे।
बदन (फा) – देह,शरीर।
बंड – बुरी,बदमाश।
बड़ – वट,बरगद।
बरबटी – दलहन।
बरबस – झूठमूठ।

बंधारा – बंधान।
बह्याड़ – पागल।
बम – धुंआ निकलने की चिमनी।
बयान (अ) – वक्तव्य,कथन।
बहीपीसी – बहकी,पागल।
बयाना – पूर्व में दी राशि।
बल्की – ढोर चराने वाला।
बमूटल्या – वाल्मीकि।
बयाबान (फा) – जंगल,सुनसान।
बजार – बाजार।
बरौनी – पलक के बाल।
बगदड़ – अनाज का कचरा।
बर्नी – अचार रखने का कॉच का बर्तन।
बरफ (फा) – बर्फ,जमा पानी।
बन्द्रा – बंदर।
बला (अ) – कष्ट,रोग।
बल्कि (फा) – अच्छा हो कि।
बहस (अ) – वाद विवाद।
बन्ना बन्नी – वर वधू।
बनबनगुड़ – चमगादड़।
बंढाटी – बागड़।
बचबच – ढेर सारे।
बग्गड़ – धान की टोरी।
बड़ला – जू के अंडे।
बड़ी – दाल पिसकर बनाई हुई।
बच्छा – बछड़ा।
बच्छी – बछिया।
बगदा – बारीक भूसी।

बरकना – गॉठ का उलझ जाना,कसा जाना।
बरकत – उन्नति।
बरात – बारात।
बरात झेलनूं – बारातियों का स्वागत करना।
बरात झेलनूं – बारातियों के नखरे सहन करना।
बह्याड़ – पागल।
बदचलन – जिसका चाल चलन ठीक न हो।
बदमाश – ऊधमी।
बही पीसी – पागल।
बाई – बहन।
बाई रे बाई – आश्चर्यसूचक।
बारीक – चूर्ण।
बार – बौर।
बारिश – बरसात।
बाट – रास्ता,राह।
बाट देखना – इंतजार करना।
बात – बत्ती।
बात – बातचीत।
बासीकुसी – रात का बचा खाना।
बावली – बावड़ी।
बाड़ी – गन्ने का खेत।
बांचना – पढ़ना।
बाई द वे (अं) – अगर।
बाहुड़ला – भुजलिए।
बारक्या – डंगरा।
बाढ़ी – बढ़ई।
बांयडर – पागल,वहशी।
बालगोपाल – बालबच्चे।

बांडा – पूँछ कटा।
बाटा – हिस्सा,भाग।
बाह्यड़ी – चितकबरी।
बाह्यड़ो – चितकबरा।
बाउस – ठंडी हवा।
बारबुहारा – पवारी गोत्र।
बाउसपानी – ठंडी हवा और पानी।
बामच्या – गुड़ में होने वाली दीमक की एक प्रजाति।
बाल बना ले – कटिंग करा ले।
बिच्चू – बिच्छू।
बिच्चू को डेरा पाट प – हर चीज साथ में होना।
बिस्मिल्ला – गिरगिट।
बिपथ – विपत्ति।
बिचरना – बाल संवारना।
बिनना – चुनना।
बिछवा – धारदार औजार।
बिछवा – एक प्रकार का आभूषण।
बिटरना – भ्रष्ट होना।
बिटरना – निम्न जाति की संगति का असर।
बिरबावटी – मखमली लाल रंग का कीड़ा।
बिराजय – शोभा देना।
बीड़ – घास का मैदान।
बीड़ा – संकल्प,पान का बीड़ा।
बीड़ी – तम्बाकू पीने हेतु तेंदू पत्ते से बनी।
बीरा – वीर।
बुखार (अ) – ज्वर।
बुनियाद (फा) – नींव।
बुलंद (फा) – ऊँचा।

बुलंदी (फा) – ऊँचाई,उत्कर्ष।
बुहारी – झाडू।
बुहारना – झाडू लगाना।
बुगदा – बारीक चूर्ण।
बुरादा – लकड़ी का चूरा।
बुड़ – पेंदी।
बुचड़ा – गुच्छा।
बुवाड़े – पवारी गोत्र।
बू (फा) – गंध।
बूढ़ा – वृद्ध।
बूड़ लेना – पेंदी को मिट्टी लगाना।
बूच – नारियल के रेशे।
बेर्रा – गेहूँ चना।
बेजा – अत्यधिक।
बेनजीर (अ) – बेजोड़,अनुपम।
बेड़ली – जोत।
बेड़ड़ी – मिलाकर बोना।
बेवा – रांड,विधवा।
बैठक – बैठने का स्थान।
बैकुंठ – स्वर्ग।
बैकुंठ धाम – स्वर्ग धाम।
बैठक – सभा,मीटिंग,सम्मेलन।
बैर – दुश्मनी।
बैर भाव – दुश्मनी के भाव।
बैरी – दुश्मन।
बोदा – भैसा।
बोंदरा – फदे हुए कथड़ी के टुकड़े।
बोटी – मॉस का टुकड़ा।

बोक्या – बिल्ला।
बोम्लय – चिल्लाना।
बोकड़ादी – बकरे बकरी की गंध।
बोह्यनी – पहला बिक्रा।
बोथड़ – धारविहीन।
बोरखाड़ी – बेर की झाड़ी।
बोवाड़े – पवारी गोत्र।
बोबड़े – पवारी गोत्र। बेवा – रांड,विधवा।
बैरी – दुश्मन।
बोर – बेर।
बोरखाड़ी – बेर की झाड़ी।
बोर – उब।
बोर (अं) – छेद।
बौखलाना – गुस्से में उबल पड़ना।
बौराना – सुध खो देना।
बौसाड़ – बौछार।

भ

भगत – भक्त,भूमका।
भटा – एक प्रकार की सब्जी।
भट्टा – ईंट,खपरैल का आवा।
भट्टी – चूल्हा।
भपाना – भाप से पकाना।
भरमाना – बहलाना।
भमोड़ी – कुकुरमुत्ता।
भमोड़ना – मधुमक्खी का काटना।
भलमनशाहत – उदारता।
भजिया – पकोड़े।
भइस – भैस।

भयसी – भैस।
भयसा – भैसा।
भइया – भैया,भाई।
भरना – पूरना।
भमोटल्या – भंवरा।
भन्नाट – सही।
भगदड़ – भागने से गिरना पड़ना।
भभूर – राख में छुपी आग।
भभका – आग का अचानक भभकना।
भकसना – खा लेना।
भरेट – भरी हुई।
भदेलवा – भादो में उत्पन्न।
भक्क – अचानक।
भड़भूजा – चने भूनने वाला।
भाग – किस्मत,हिस्सा।
भागदौड़ – व्यस्तता।
भाभी – भावज,भौजाई।
भारीभरकम – वजनदार।
भाव – मूल्य।
भाऊ – पिता।
भाड़ा – किराया।
भाड़ू – एक प्रकार की गाली।
भाड़ – चने आदि भूनने का चूल्हा।
भागय – भागना।
भाजी – पत्तेदार सब्जी भाजी।
भांगड़ – पंचायत।
भात – पका चावल।
भाता – पसंद।

भाता – लोहार का भाता।
भाकर – रोटी।
भिलवा – एक प्रकार का फल।
भिंगरी – फिरकी।
भिन्नाय – आवेश में आना।
भिन्भिनाय – भिनभिनाना,मक्खी की आवाज।
भिम्मनभाट्या – एक प्रकार का आम।
भीर – कुँआ।
भीत – दीवार।
भीड़भड़क्का – भीड़भाड़।
भुड़ला – भुट्टा।
भुड़का – नदी मे खोदा अस्थायी कुआ।
भुरका – चूरा।
भुमका – झाड़फूँक करने वाला।
भुमसारा – सबेरा।
भुलचुक – गलती।
भूरो – भूरा।
भूरसी – भूरी।
भूसा – गेहूँ आदि का भूसा।
भेला – गुड़ की गॉठ।
भेली – गुड़ की छोटी गॉठ।
भेदरा – छोटे खट्टे टमाटर।
भेद – गुप्त जानकारी।
भेदाय – अंदर तक जाना।
भोर – प्रभात।
भोक्सा – रूखा सूखा।
भोक्टा – छेद।
भो भो – कुत्ते की आवाज।

भोभाय – अनावश्यक आवाज करना।
भोलोभालो – भोला इंसान।
भोरो – भोलाभाला।
भोभाट – पवारी गोत्र।
भौरा – गोल चक्र।
भौंरा – भंवरा।
भौरी – गोल छोटा चक्र।

म

मकसद (अ) इरादा।
मकान (अ) घर।
मक्कार (अ) छली।
मगजमारी – दिमागी काम, मेहनत का काम।
मजदूर (फा) श्रमिक।
मजबूत (अ) पुष्ट,दृढ़।
मजमा (अ) भीड़।
मजा (अ) स्वाद, आनंद।
मजाक (अ) हँसी, ठिठोली।
मजाल (अ) सामर्थ्य।
मर्‍यो – मरा।
मरघट – श्मशान।
मरनमाटी – अंतिम संस्कार।
मतलब (अ) अभिप्राय,स्वार्थ।
मतलबी (अ) स्वार्थी।
मदद (अ) सहायता।
मदरसा (फा) पाठशाला।
मरजी (अ) इच्छा।
मरम्मत (अ) दुरूस्त।
मरहम (अ) लेप।

मरीज (अ) रोगी।
मर्ज (अ) रोग, आदत, रोग।
मर्द (अ) पुरूष, वीर।
मलबा – बारीक व टूटी फूटी ईंट मिटटी, कूड़ा करकट।
मलाल (अ) दुख, विषाद।
मलेरिया (अं) जूड़ीताप।
मल्लाह (अ) केवट, मांझी, निषाद।
मशहूर (अ) ख्यात, प्रसिद्ध।
मसला (अ) समस्या,सवाल।
मंजन – दॉत साफ करने का पावडर।
मंझोला – मध्यम।
मंडाना – बिठाना।
मंढा – मंडप।
मंदो – कमजोर।
मंदा – धीमा।
मंझार – मध्य।
मरी – मेरी।
मंतर – मंत्र।
मसक – गला दबाना।
मसक – खा लेना,धमक,मारना।
म ख् – मुझे।
मंजीरा – बजाने का वाद्य।
मटकाना – हिलाना।
मटकना – अनावश्यक घूमना।
मक्या – मक्का।
मस्ताना – मस्ती मारना।
मटमैला – मिट्टी के रंग का,गंदा।
मतरना – झाड़ फूॅक करना।

मतरना – चुरा लेना।
मसना – आटा गूॅथना।
मटकूल – मटकने वाली।
मटमट – टकटक देखना।
ममेरा – मामा पक्ष का।
ममेरी – मामा पक्ष की।
मरखंडा – मारने वाला।
मजूर – मजदूर।
मछोंडी – बैल के श्रृंगार हेतु रस्सी का आभूषण।
मचमचाना – अत्यधिक गंदे हो जाना।
मंझला – बीच का।
मंझली – बीच की।
मंझार घर – बीच का घर,घर के बीच।
मंड दे – बिठा दे।
मांडना – एक प्रकार की चित्रकला।
मजमा – भीड़
मजा – आनंद।
महिमा – महत्व।
मरन गड़न – अंतिम संस्कार।
मांजरी – बिल्ली।
माट – एक प्रकार की भाजी।
मांडन – लकड़ी की पट्टियों से पटा छत।
माकूल (अ) ठीक, शिष्ट।
माफ (अ) क्षमा।
मालिक (अ) स्वामी,ईश्वर।
मालिश (अ) मर्दन।
मांडग्या – गाड़ी की पट्टी।
मांडगी – गाड़ी की पट्टी।

मांड – चावल का स्टार्च।
माराठोकी – लड़ाई, झगड़ा।
माथा – मस्तक।
मांडरी – भगत का पूजा पर बैठना।
मांडरी उतारू का – जुनून उतारना।
माट्या – चक्रवात।
माटी – मिट्टी।
माटी – अंतिम संस्कार।
मामा – मॉ का भाई।
मिजाज (अ) तबीयत,प्रकृति।
मिजवान – मेहमान।
मिस – बहाना।
मिमियाना – बकरी की आवाज।
मिमियाय – मिमिया रही।
मिरगी – एक प्रकार का रोग।
मियाद – निश्चित अवधि।
मुकन – अरहर के सूखे पतले दाने।
मुरना – भेदना।
मुरय – मिट्टी आदि को पानी डालकर भीगने देना।
मुक्का – घूसा।
मुंडी – गर्दन,खम्बा।
मुड (अं) – प्रकृति
मुंडो – बिना टोपी का,बिना अवरोध का।
मुगालता (अ) – धोखा,भ्रम।
मुजरिम (अ) – अपराधी।
मुताबिक (अ) – अनुरूप,अनुसार।
मुनादी (अ) – ढिंढोरा।
मुनासिब (अ) – वाजिब।

मुनाफा (अ) – नफा,लाभ।
मुफ्त (अ) – बिना दाम के।
मुर्दा (फा) – शव,लाश।
मुराद (अ) – मनोरथ।
मुरौवत (अ) – लिहाज।
मुलाकात (अ) – भेंट।
मुलायम (अ) – कोमल।
मुल्क (अ) – देश।
मुलूक – देश।
मुल्ला (अ) – मौलवी।
मुवक्किल (अ) – वकील।
मुश्किल (अ) – कठिन।
मुसाफिर (अ) – यात्री।
मुसीबत (अ) – संकट,आफत।
मुहताज (अ) – विवश।
मुहरा (फा) – गोट।
मुहलत (अ) – अवकाश,फुर्सत।
मुरछान – मुर्छा।
मुंगुस (अं) – नेवला।
मुचका – बैलों के मुॅह पर बॉधा जाने वाला फॉसा।
मुकड़दम – जमादार।
मुंढा – मुॅह।
मुरथड़ना – मरोड़ना।
मुरगड़ना – मरोड़ना।
मुस्तंडा – छुट्टा बदमाश।
मू – मैं।
मूक्को – गूॅगा।
मूत – मूत्र।

मूतना – पेशाब करना।
मूरत – मूर्ति।
म्यान (फा) तलवार रखने की खोल।
म्याऊ – बिल्ली की आवाज।
मेंदरा – मिट्टी की बड़ी कोठी।
मेंदरी – मिट्टी की छोटी कोठी।
मेज (फा) टेबल।
मेवा (फा) सूखे फल।
मेहनत (अ) श्रम।
मेहनताना (अ)मजदूरी।
मेहनती (अ) परिश्रमी।
मेहमान (फा) अतिथि।
मेंडकी – मेंढक।
मैंदी – मेंहदी।
मैला – गंदा।
मोरा करना – औपचारिकता करना।
मोड़ा पड़ना – विघ्न आना।
मोर्चा (फा) जंग।
मोल – दाम।
मोंज – गिन।
मोंजना – गिनना।
मोहयतूर – मुहुर्त।
मोकाट – खुला,छुटटा।
मोकरी – भुरभुरी,नरम।
मौका – अवसर।
मौज (अ) आनंद,मस्ती।
मौजूद (फा) उपस्थित।
मौत (फा) मृत्यु।

य

यकीन (अ) विश्वास।
यकीनन (अ) निःसंदेह।
यदाकदा (अ) जब – तब।
यार – दोस्त।
यारी – दोस्ती।
याद – स्मरण।
याददास्त – स्मरणशक्ति।
यी – वह, वे।
यू – यह।
येना – इस।

र

रंक – गरीब।
रंग – ढंग – तौर तरीका।
रंगीन (फा) रंगा हुआ।
रंज (फा) दुख, पछतावा।
रग (फा) नस।
रग–रग (फा) नस – नस।
रज – धूल मिट्टी आदि के महीन कण।
रजा (अ) स्वीकार।
रजामंदी (अ) स्वीकृति, आपसी समझ।
रजाई (फा) दुलाई।
रद्दी (फा) बेकार,निकम्मा।
रसद (फा) राशन,अनाज।
रसीद (फा) प्राप्ति।
रस्म (अ) रीति रिवाज।
रहम (अ) कृपा,दया।

रबी – हिवारा (ठंड) की फसल।
रबना – काम करना,खपना।
रबाना – काम कराना।
रंग्यो – रंगा हुआ।
रई – मथानी।
रपट दे – भगा दे।
रगड़ दे – भगा दे।
रगड़ – घर्षण।
रबड़ – रबर।
रबड़ी – पतली मिठाई।
रंभाय – गाय का रंभाना।
रगत – रक्त,खून।
रक्दड़ – खराब खून।
रकबा – खेत का कुल क्षेत्र।
रम गयो – मन लग गया।
रफाड़ – चारागाह।
रमना – जी लगना।
रब्बू – बड़े व गोल।
रजोत्सव – प्रकृति, स्त्री का ऋतुमती उत्सव।
राखड़ – राख।
राखय – रखना।
राख – रखना।
रायपट – चाटा।
राल – लाख।
राई – सरसों।
रांती – रसोई घर।
रिवाज (फा) प्रथा।
रिश्ता (फा) नाता,संबंध।

रिकामा – खाली।
रिकामापन – खालीपन।
रिप्पा – पतला व चपटा पत्थर।
रिंगय – चलय।
रिबिन (अं) रिबन।
रिस – अप्रसन्नता,गुस्सा।
रिसय – रिसना।
रिकामल्या – बिना काम के।
रूख (फा) – चेहरे का भाव।
रूमाल (फा) – दस्ती।
रूंधना – गला भर आना।
रूंधना – बागड़ बनाना।
रूवय – रोना।
रूखो सूखो – रूखा सूखा।
रूंगना – बक्खर दबाने का हेंडल।
रेव – रेत के बारीक कण।
रेंगी – छोटी गाड़ी।
रैकय – भैस की आवाज।
रैपट – चांटा।
रोड़ – कमजोर।
रोड़काया – कमजोर शरीर का।
रोजनदारी – प्रतिदिन मजदूरी।
रोंगट्या – रोंगटे ।
रोग राई – बीमारी।
रोज (फा) प्रतिदिन।
रोजगार (फा) जीविका।
रोशन (फा) प्रकाशित।
रोशनी (फा) प्रकाश।

रोण्टाई – धोखाधड़ी,गलत,छल।
रोण्टी – छलावा।
रौनक (फा) चमक,बहार।
रौंदना – खूँदना,कुचल देना।

ल

लकीर – लाईन।
लखवा – लकवा।
लखपति – धनवान।
लड़ – पटाखे की लड़।
लड़ – लड़ाई के लिए कहना।
लड़ी – हार।
लड़ी – झगड़ी।
लता – बेला।
लताड़ – फटकार।
लड़का – लड़की – पोर्‌या पोरी।
लतीफा (अ) चुटकुला।
लफंगा (फा) बदमाश।
लफ्‌ज (अ) – शब्द।
लब (फा) – ओंठ,किनारा।
लबादा (फा) चोंगा।
लफ्‌बाजी – बातचीत।
ललकार – लड़ने के लिए पुकार।
लशकर (फा) सेना,फौज।
लाव लश्कर – फौज फटाका।
लहजा (अ) – ढंग।
ललाता खखाता – खाने को झूरने वाला।
ललाती खखाती – खाने को झूरने वाली।
लम्हेटा – पहले पति का दूसरे पति के घर लाया बेटा।

लम्हेटी – पहले पति की दूसरे पति के घर लाई बेटी।
लठमार – अपढ़।
लठैत – बदमाश।
लगुन – विवाह रस्म।
लगुन गनाना – विवाह की रस्म पूरी करना।
लय – बहुत।
लय – सुर ताल।
लटका – लटका हुआ।
लटका – लटकाने का कीना।
लटका झटका – चुंगल में फॉसना।
लबड़ धो धो करना – बातें बनाना।
लपट – गरम हवा।
लपट – लिपटने का कहना।
लचरी – धीरे से।
लकड़ा फाटा – ईंधन।
लफड़ा – गड़बड़।
लव – चकचोंदी।
लट – जुल्फ।
ला – लाने का कहना।
लाटा – भूने तिल,मॅगफली दाने,महुए का कुटा मिश्रण।
लानत (अ) धिक्कार।
लाम – फौज का दस्ता।
लाड़ – प्यार।
लाड़लो – प्यारा,लाड़ला।
लाड़ा – वर,पति।
लाड़ी – वधू,पत्नी।
लाडू – लड्डू।
लाज – शर्म।

लाही – धान,चावल,मक्के के फूले।
लांदागोंदी – झूमाझटकी।
लांडग्या – लकड़बग्घा।
ला जो – ले आना।
लिबूद – सफेद मिट्टी का लेप।
लिबास (अ) पोशाक।
लिम्बू – नीबू।
लिक – जू के अंडे।
लिलपी – पहली बारिश के बाद उगी हरी घास।
लिपाई पुताई – घर सराना।
लिखाई पढ़ाई – शिक्षा प्राप्त करना।
लीम्ब – नीम।
लीला – महिमा।
लीम – नीम।
लुस्त – निढाल।
लुकटी – जलता सरकंडा।
लुह्यड़ी – जलती लकड़ी।
लुगड़ा – साड़ी।
लुकना – छिपना।
लुका छिपी – एक खेल।
लुगाई – पत्नी।
लुच्चा – दुराचारी।
लुस लुस करना – बार बार आसपास मंडराना।
लुतर्या लगाना – एक की दो लगाना।
लुंगराय – यहॉ वहॉ पड़े रहना।
लुकाना – छिपाना।
लुंगरू – इधर उधर पड़ा रहने वाला।
लेंडी – चूहे,बकरी आदि की काली व गोलीनुमा शौच।

लेड़ – शुक्राणु,धात।
लेरा – लिपाई पुताई के समय बनने वाले तरल पदार्थ के निशान।
लेख लगना – मन्नत का पूरी होना।
लोग – पति।
लोगनी – पत्नी।
लोट – लोटना,लोट लगाना।
लोटा – पानी का बर्तन।
लोरय – कपड़ों का जमीन से लगना,लगकर घिसना।
लोरय गड़बड़य – नीचे ही लेटना व करवटें बदलना।
लोराय – जमीन से लगना।
लोम्कय – झूल रही,लटक रही।
लोम – धान की बाली।
लोढ़ना – गाय,भैस के गले में बंधी लम्बी लकड़ी।
लोंढ जा – सो जा।
लोंढना – सोना।
लोराना – जमीन पर घिसना।
लौटना – वापस आना।
लौट्या – आग के गोले।

व

वफा (अ) – कृतज्ञता।
वफादार (अ) – कृतज्ञ,राजभक्त।
वर्दी (अ) – पहनावा,पोशाक।
वल्द (अ) – बेटा,पुत्र।
वल्दीयत (अ) – माता पिता का नाम।
वसीयत (अ) – मृत्यु के बाद सम्पत्ति का वारिश।
वसूल (अ) – प्राप्त।
वहम (अ) – भ्रम,शंका।
वहम (अ) – भ्रम,शंका।

वहशी (अ) – जंगली।
वर – दुल्हा।
वधू – दुल्हन।
वाकिफ (अ) – जानकार।
वारंट (अं) – आज्ञापत्र।
वारिस (अ) – उत्तराधिकारी।
वाहियात (फा) – बेहूदा,निकम्मा।
विकल – बेचैन।

श

शकर – शक्कर।
शतरंज (अ) – एक प्रकार का खेल।
शनाख्त (फा) – पहचान।
शफा (अ) – नीरोग्यता।।
शराफत (अ) – भलमनसाहत।
शराब (अ) – मद्य।
शरारत (अ) – शैतानी,पाजीपन।
शरीफ (अ) – भला,कुलीन।
शर्त (अ) – होड़,बाजी।
शर्म (फा) – लज्जा,लिहाज।
शर्मिंदा (फा) – लज्जित।
शहंशाह (फा) – सम्राट।
शह (फा) – उकसाना।
शहद (अ) – मधु।
शहनाई (फा) – बाजे।
शहर (फा) – नगर।
शहीद (अ) – बलिदानी।
शऊर – सलीका।
शर्बत – मीठा पेय।

शकरांती – मकर संक्राति।
शक – शंख।
शक – शंका।
शकी – शंका करने वाला।
शंकालू – शंका करने की प्रवृत्ति।
शरम – शर्म,हया।
शरमाना – लज्जित होना।
शादी (फा) – विवाह।
शान (फा) – ठाठ,गौरव।
शाबास (फा) – खश रहो,वाह वाह।
शाबासी (फा) – सराहना,साधुवाद।
शाम (फा) – सन्ध्या।
शामत (अ) – मुसीबत,बुरे दिन।
शामियाना (फा) – तंबू।
शामिल (अ) – मिला हुआ।
शायद (फा) – संभवतः।
शॉट (अं) – धक्का।
शिकन (फा) – सिलवट।
शिकवा (फा) – शिकायत।
शिकस्त (फा) – हार।
शिनाख्त (फा) – परख,पहचान।
शीशा (फा) – कॉच,आईना।
शुक्रिया (फा) – कृतज्ञता।
शुतुर (फा) – ऊॅट।
शुतुरमुर्ग (फा) – ऊॅट की तरह ऊॅचा मुर्गा।
शुबहा (अ) – संदेह।
शुरू (अ) – प्रारंभ।
शेरनी – छोटा डंगरा।

शेरनी – घाने के समय पहली बार की गुड़ की छोटी भेली।
शेरनी – साहसी महिला के लिए विशेषण।
शैतान (अ) – प्रेत,भूत।
शोर (फा) – हल्ला।
शोहरत (अ) – प्रसिद्धि।

ष

षड़यंत्र – अनैतिक रूकावटें डालना।
षटकोण – छः कोण।

स

सई – सेवई।
सई कुरोड़ी – सेवई व पापड़।
सकरात – मकर संक्रांति।
सक सक करनो – घबराना।
सकारी – आने वाला कल।
सकेलना – समेटना।
सखा – दोस्त।
सखी – सहेली।
सगा – संबंधी।
संगीन (फा) – भारी,भीषण।
सराय पोताय – लिपाई पुताई।
सब्बल – लोहे की खोदनी।
सस्या – खरगोश।
सराना – घर लिपना।
सरवा – खेत में गिरी बालियॉ उठाना।
समदोरा – विवाह के बाद की रस्म।
सपातय – घुलना मिलना।
सरंडा – दाने निकले मक्के के ठूंठ।

सत्तू – भूने जौ,गेहूॅ,चने का आटा।
सत – सच्चाई।
सत्यानाश – एक प्रकार की गाली।
सरकांडा – सन,अम्बाड़ी के छिलके उतरे ठूॅठ।
ससनी – कुए का आधार स्तम्भ।
सरोता – सुपारी काटने की कैची।
सख्ती – कठोरता।
सटासट – बिना देरी किए,शीघ्रता से।
समधन – बेटे बेटी की सास।
समधी – बेटे बेटी का ससुर।
सड़ल्या – गिरगिट।
सरकना – हटना।
सरकाना – खिसकाना।
सटक – भाग।
सनसनाना – तप जाना,गरम हो जाना।
सराक – सलाक।
सरग – स्वर्ग।
सरक सेंडी – पेड़ की चोटी।
संतरी (अं) – प्रहरी।
सख्त (अ) – कड़ा दृढ़।
सजा (फा) – दंड,कारावास।
सरको – सीधा।
सरको सीधो – सीधा साधा।
सरको – खिसका हुआ।
सदत नी – हाथ नहीं आना।
सदमा (अ) आघात।
सद्गति – मोक्ष प्राप्ति।
सन् (अ) – साल,वर्ष।

सफर (अ) – यात्रा।
सफेद (फा) – उजला,धवल।
सबक (अ) – सीख।
संजा – शाम।
सब्ज (फा) – हरा,कच्चा।
सब्जी (फा) – हरा,कच्ची साग भाजी।
सब्ज बाग दिखाना – झूठी आशाएं दिलाना।
सलीका – तौर तरीका।
सलूका – मोटे कपड़े का पूरी बाह का ब्लाउज जैसा परिधान।
सर (फा) – सिर,मस्तक।
सरकार (फा) – हुकुमत,शासन।
सराय (फा) – मुसाफिरखाना।
सरासर – पूर्णतया।
सरीखा – समान।
सलाद (अं) – हरी,कच्ची सब्जी के टुकड़े।
सलाम (फा) – नमस्कार।
सलाह (अ) – राय,मशवरा।
स्याही (फा) – रोशनाई।
स्वांग – हँसी मजाक का तमाशा।
साख्य – मैत्री,दोस्ती।
साया (फा) – छाया,परछाई।
साल (फा) – बरस,वर्ष।
साथरा – अन्न जल त्यागकर मृत्यु को वरण करना।
सांसत – दुविधा।
साजरी – अच्छी।
साजरो – अच्छा।
साव – ईमानदार।
सार – रोपनी हेतु गहरी नली।

सार – सारांश,निष्कर्ष।
सारपा – समूह।
साध – वश में करना।
साधु – संत।
साटा – गन्ना।
सालन – बेसन,बड़ी आदि सब्जी।
सालबेदू – प्रतिवर्ष जन्म देने वाली।
साला – पत्नी का भाई।
साला भासरा – पत्नी का छोटा व बड़ा भाई।
सालू – पगड़ी।
साढू – साली का पति।
सामट – संकरी गली।
सामटी – संकरी व छोटी गली।
सांजा – आटे गुड़ का मिश्रण।
सिनेमा (अं) – चलचित्र।
सिरहाना – तकिया।
सिफारिश (फा) – अनुशंसा।
सियासत (अ) – राजकाज।
सिल – चपटा पत्थर जिसपर मसाला बॉटे।
सिलबट्टा – मसाला बॉटने का पत्थर।
सिलगना – परचना।
सिलगाना – परचाना।
सिरवा – पानी का झल्ला।
सिगड़ी – चलित चूल्हा।
सिग – ऊपर तक भरना।
सिंग – माथे पर उगे सिंग।
सिंगोटी – सिंग के आसपास का स्थान।
सीड़ – बारिश पानी से आया गीलापन।

सीड़ – दरार।
सीदा – दाल चावल आटा।
सीदा सादा – एकदम सरल।
सीदो – सीधा।
सिंगार – सजना संवरना।
सिलकय – दर्द होना।
सिराना – डुबोना,विसर्जित करना।
सिराना – दूध आदि का राख में डालना।
सुअर डुक्कर – वराह।
सुदाड़ा – समझ।
सुरमा (फा) – अंजन।
सुरूर (फा) – आनंदश्मादकता।
सुलह (अ) – समझौता।
सुस्त (फा) – ढीला,आलसी।
सुराख (फा) – छेद।
सुसमरो – पीटकर अधमरा करना।
सुभीता – सुविधा,सहूलियत।
सुधारू – ठीक करूँ।
सुत्ती – संयोग।
सुत्ती नहाय – संयोग न होना।
सुपड़ा – सूपा।
सुसुन्द्री – चुहिया।
सुस्ताना – आराम करना।
सुतना (अ) – पेंट,पाजामा।
सुगनूर – लकड़ी का झाडू।
सुर्की – ठंडी हवा।
सुझना – समझना।
सुझत नहाय – समझ में न आना।

सुध – चेतना।
सुवारी – पूरी,पूड़ी।
सुहाग – पति।
सूद (फा) – ब्याज।
सूर्या – पाई से छोटा नाप।
सूर्या पाव – पाव आधा किलो।
सेरनी – सेर भर की गुड़ की भेली।
सेवत गई – उबजना,चर्म रोग का फैलना।
सेवई – एक प्रकार का व्यंजन।
सेहरा – दूल्हे के सिर पर बॉधा जाने वाला मुकुट।
सेमड्या – जिसकी सदा नाक बहे।
सेम – एक तरकारी।
सेम बल्लर – सेम।
सैगा – पूरा,सम्पूर्ण।
सोय – सहूलियत,चिंता।
सोफा (अं) – बैठने की गद्दीदार बैठक।
सोरपा – सुडुपकर खाना।
सोप्ती – दोस्त,लड़का।
सोंड – मोट के पानी का निकास द्वार।
सोंठ – सूखा अदरक।
सोंगाड्या – सोग करने वाला।
सोड्या – तिलचट्टा।
सोहे – शोभित,शोभा देना।
सौकास – सुविधाजनक, ढंग से।
सौगात (फा) – उपहार।
सौसार – जीवन।
सौत – दूसरी पत्नी।
सौतेला – सौत से उत्पन्न।

सौदा (फा) – बिक्रा भाड़ा।
सौभाग्यवती – सुहागिन,अच्छे भाग्य वाली।

ह

हक (अ) – अधिकार।
हकला – हकलाने वाला।
हकीकत (अ) – असलियत।
हकेल – हॉक देना,निकाल देना।
हग – शौच का कहना।
हगर्या – बार बार शौच जाने वाला।
हम्ख – मुझे,हमें।
हमरो – मेरा,हमारा।
हबकना – झट से काटना।
हत – हताश भाव जैसे – हत माय।
हमेल – गले का एक आभूषण।
हजम (अ) – पाचन,गबन।
हजाम – नाई।
हजामत (अ) – बाल बनवाना।
हद (अ) – सीमा,अति।
हफ्ता (फा) – सप्ताह।
हमला (अ) – आक्रमण।
हमेशा (फा) – सदैव।
हया (अ) – शर्म,लज्जा।
हंगामा (फा) – उपद्रव।
हर (फा) – प्रत्येक।
हड़बड़ी – उतावली,शीघ्रता।
हड़कंप – तहलका।
हरास (फा) – भय,डर,आशंका।
हरारत (अ) – हल्का ज्वर।

हरएक – प्रत्येक।
हरेरा – जच्चा को पिलाया लाने वाला काढ़ा।
हरकत (अ) – शरारत,चुहलबाजी।
हरगिज (फा) – कदापि,कभी।
हर्जाना (फा) – क्षतिपूर्ति।
हराम (अ) – बिना मेहनत की।
हलफनामा (अ) – लिखित बयान।
हटक – कना करने का भाव
हलाल (अ) – वध।
हवेली (अ) – बड़ा पक्का मकान।
हपक – तोड़ना,उखाड़ना,खाना।
हरद – हल्दी।
हनुमान प पानी चढ़ानूॅं – एक दो लोटे पानी में स्नान करना।
हड्डी पसली एक करनूं – हाथ पैर तोड़ डालना।
हड़ी हड़ी – कुत्ते को भगाने की आवाज।
हरामखोर – एक प्रकार की गाली।
हलसना – फल गिराने हेतु पेड़ की शाखाएं हिलाना।
हवुस – इच्छा,जिज्ञासा।
हल्काई – काम करने की तत्परता।
हलकट – हल्का और ओछा।
हॅसाई – उपहास,निंदा,हॅसी।
हाग्या – टट्टी।
हागय – टट्टी करना,शौच करना।
हाजिर (अ) – मौजूद।
हाजिरजवाब (अ) – तत्काल उत्तर देने वाला।
हाजिरी – उपस्थिति।
हामी – स्वीकृति।
हामी भरना – स्वीकृति देना।
हाल – कुशल,क्षेम।

हालत (अ) – स्थिति,दशा।
हालात – परिस्थिति।
हातर – बिछा।
हातरना – बिछौना।
हाका – आवाज।
हाका देना – पुकारना।
हाका मार – आवाज दे,बुला।
हासय – हॅसना।
हाथ नी बनत – मासिक धर्म आना।
हाथापाई – मारपिटाई।
हांडी – मिट्टी का बर्तन।
हाड़ – हड्डी।
हाड़मॉस – हडडी और मॉस।
हाड़ग्या – हड्डी पसली।
हिकमत – चतुराई।
हिम्मत (अ) – साहस।
हिसाब (अ) – गणित,गिनती।
हिस्सा (अ) – भाग।
हिरवा – हरा।
हिरवी – हरी।
हिरवो – हरा।
हिंडोरना – झूला,हिंडोला।
हिरोती – मिर्च पावडर।
हिरदा – हृदय।
हिंद्यानी – निशान,चिह्न।
हिंडय फिरय – चलना फिरना।
हिरसाई कुचराई – ईर्ष्या द्वेष।
हिवारा – ठंड के दिन।
हीक – कै का मन करना।
हीक – गंध।

हीनो – कमजोर।
हीरा – एक प्रकार का रत्न।
हीना – कमजोर।
हुक्का (अ) – चीलम।
हुक्म (अ) – इजाजत,आज्ञा।
हुनर (फा) – फन,कारीगरी।
हुलिया (अ) – चेहरा मोहरा।
हुड़दंग – शोरगुल,जमावड़ा।
हुडुत – मनाई का स्वर।
हेजड़ – लाड़ लगाना।
हेपल्या – कमजोर।
हेड़ – निकाल।
हेवा – ईर्ष्या।
हेवा हिसकी – ईर्ष्या,द्वेष।
हेवड़ – तिरछा खींचना।
हेड़म्बा – हठी।
हेकड़ी – अक्खड़पन,हठीलापन।
हेकड़ो – तिरछा।
हैरत (अ) – अचम्भा।
हैरान (अ) – चकित।
हैवान – पशु।
हैवानियत – पशुता।
हैसियत (अ) – योग्यता।
होम – हवन,पूजा।
होला – हरे भूने चने।
होली – रंगों का त्योहार।
होटल (अं) – होटल।
हौसला (अ) – हिम्मत,उत्साह।
हौसला अफजाई (अ) – हिम्मत बॅधाना।
हौवा – डरावनी वस्तु।

निःशुल्क आवास एवं भोजन की व्यवस्था

भोपाल में शीघ्र ही समाज सदस्यों के लिए निःशुल्क आवास एवं भोजन की व्यवस्था सतपुड़ा संस्कृति संस्थान, भोपाल के सौजन्य से प्रारंभ की जा रही है। इस व्यवस्था के सूत्रधार हैं– बैतूल बाजार–रामप्रसाद गोहिते, बैतूल– राजू चिकाने, नागेश पवार, अविनाश देशमुख उदल पवार, बनवारीलाल पवार, संजय पठाड़े, अनंतराम रबड़े, एम आर देशमुख, कन्हैयालाल बुवाड़े,दिनेश डिगरसे, बालकृष्ण बारंगे, नान्हूलाल पठाड़े, गुलाबराव कालभोर, रोंढा, मुलताई– अनिलपवार, केशव फरकाड़े, गेंदलाल बुवाड़े, बाबूलाल डोंगरे, केआर बोबड़े, रोन्या पवार,सम्पत पवार,अन्ना महाजन उमनपेट, महादेव पवार, बोरगॉव, मुन्नालाल चिकाने,लेंदागोंदी, मुन्नालान चोपड़े,शिवराज देशमुख, श्रीराम देशमुख पारबिरोली,नत्थूजी डोंगरे, मुन्नालाल डोंगरे बानूर,दशरथ डोंगरे पोहर, शिवचरण डोंगरे, साईखेड़ा,काशीराम बुवाड़े, कन्हैयालाल बुवाड़ेपाठाखेड़ा,आमला–शंकर बुवाड़े, पांढुर्ना– डॉ अशोक पराड़कर, डॉ अशोक कड़वे, भोपाल– पी एल बारंगे,एन एल बुवाड़े,बी एल देशमुख, एस डी धारपुरे, एसएम खवसे, निर्मल बोवाड़े, चित्तरंजन पवार,महेश चौधरी,हीरू पवार,दिनेश डोंगरे, श्याम पवार,अविनाश बारंगे,अशोक गाकरे (पवार) हेमंत खौसे, कैलाश कौशिक, विजय कड़वे, हरीश कोड़ले, डॉ कुलेन्द्र कालभोर, बलराम बारंगे,डॉ अशोक बारंगा, मारूति बारंगे, शिवशंकर पवार, तरूण ठवरे, राजेश बारंगे, डी के देशमुख अनंत बैंगने चन्द्रकांत पवार,हरिहर डहारे, टी आर काटवले, गुलाब बुवाड़े, बी एल देशमुख, अशोक डहारे, किशोर परिहार, विजय बारंगे,डॉ आर एन घाघरे, एन के पाठेकर, के एल परिहार, होशंगाबाद–नारायण पवार, छिंदवाड़ा– डॉ विजय पराड़कर,सेवाराम खवसे, पालाचौरई– यादोराव पवार,गणेश पवार, रिधोरा– सम्पत पवार, सुताराम शेरके, कृष्णाजी पवार, गाजनडोह, जबलपुर–एम एस बोबड़े, गुलाब देशमुख, नंदलाल बारंगे, पीथमपुर, धार– विजय बोबड़े,हेमराज पवार, नागपुर–विट्ठल नारायण चौधरी, दिलीप कालभोर, इंदौर– विजय बुवाड़े, पाथाखेड़ा– शंकर डोंगरे, सारनी– मधुकर बारंगे,आर पी डोंगरे, भंडारा– प्रदीप कालभोर, हरदा–श्वेता पवार,एन आर डोंगरे,डॉ पुष्पा देशमुख, रायपुर–गणपति पवार, दुर्ग–एस एल हिंगवे, मुम्बई–रवि कांत बारंगा, अलीबाग– उमेश देशमुख,

शोधार्थी के लिए सदैव तत्पर सतपुड़ा संस्कृति संस्थान

पवारी संस्कृति व लोक साहित्य पर शोध करने वाले शोधार्थी समय–समय पर सतपुड़ा संस्कृति संस्थान,भोपाल की पहल से लाभांवित होते रहते हैं। कोई भी शोधार्थी सतपुड़ा संस्कृति संस्थान,भोपाल द्वारा किए गये अब तक के कार्यों का अपने शोध कार्यों में उपयोग कर सकेगा। केवल उसे सतपुड़ा संस्कृति संस्थान,भोपाल का नाम अपने संदर्भ में उल्लेख करना अनिवार्य होगा,साथ ही शोध कार्य की एक प्रति सतपुड़ा संस्कृति संस्थान,भोपाल को उपलब्ध कराना होगा।

पवारी लोक साहित्य एवं संस्कृति पर अभी तक लगभग 30 किताबें प्रकाशित हो चुकी हैं। आपके सुलभ संदर्भ के लिए इनकी प्रति अवलोकनार्थ उपलब्ध है।

सतपुड़ा संस्कृति संस्थान, भोपाल

एचआईजी–6, सुखसागर विला, फेज–1,
भेल,भोपाल–462021 (म.प्र.) मोबा. 09425392656
फेक्स–0755–2552362
ई मेल–vallabhdongre6@gmail.com